हिम-प्रभा 2020

87-88वां अंक

कार्यालय
प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा),
हिमाचल प्रदेश, शिमला

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
सत्यमेव जयते

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय
प्रधान महालेखाकार
(लेखा व हकदारी),
हिमाचल प्रदेश, शिमला

खजियार, हिमाचल प्रदेश

नराकास की बैठक में भाग लेते हुए प्रधान महालेखाकार (ले.प.) तथा प्रधान महालेखाकार (ले.व ह.) तथा अन्य अधिकारीगण।

प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए उप-महालेखाकार (ले.प.)

पुरस्कार प्राप्त करते हुए व.ले.प.अ. हिन्दी कक्ष (ले.प.)

हिम - प्रभा

स्वत्वाधिकार: प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

प्रकाशन: हिम-प्रभा

प्रकाशक: प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
तथा
प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी),
हिमाचल प्रदेश, शिमला

अंक: 87-88वां

मूल्य: राजभाषा के प्रति निष्ठा

मुख्य पृष्ठ परिचय: कार्यालय प्रधान महालेखाकार,
हिमाचल प्रदेश

निवेदन

- सम्माननीय रचनाकारों से रचनाएं भेजते समय निम्नलिखित नियमों का पालन करने का विनम्र अनुरोध है:-
- रचनाएं टंकित हो तथा दो प्रतियों में प्रेषित की जाएं जो स्पष्ट तथा सुवाच्य हों।
- प्रकाशनार्थ रचनाएं हिन्दी कक्ष, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) तथा प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) हिमाचल प्रदेश, शिमला में उपलब्ध कराई जाएं।
- अस्वीकृत रचनाएं लौटाने का प्रावधान नहीं है। अत: रचनाओं की मूल प्रति अपने पास सुरक्षित रखें।

भविष्य में भी आपकी रचनाओं की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

सम्पादक मण्डल

संदेश

ऋतु ढिल्लों

हिन्दी पत्रिका 'हिम प्रभा' का 87-88वां अंक आपको प्रस्तुत करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। 'हिम प्रभा' पत्रिका हमारे विभाग में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अहम भूमिका निभा रही है। 'अनेकता में एकता' को चरितार्थ करता हमारा देश विभिन्न विविधताओं को समेटे हुए है, जिसको 'हिन्दी' अवलम्बन प्रदान करती है। हिन्दी भाषा को सीखना भी सरल है क्योंकि इसमें जो बोला जाता है वही लिखा जाता है। इसकी यही विशेषता इसकी लोकप्रियता का कारण है।

प्रस्तुत अंक का प्रकाशन वर्तमान 'कोविड-19' महामारी से उत्पन्न परिस्थितियों को देखते हुए डिज़िटल माध्यम से किया जा रहा है। इससे अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपने विचारों की अभिव्यक्ति का सुअवसर प्राप्त होगा। ई-पत्रिका वेबसाइट पर न केवल सबके लिए सहज सुलभ रहेगी अपितु इससे 'डिज़िटल इंडिया' के विचार को भी बल मिलेगा।

हिम-प्रभा की सफलता में कार्यालय के प्रबुद्ध रचनाकारों एवं सम्पादक मण्डल का बहुत बड़ा योगदान है। पत्रिका के प्रकाशन में लेखन सामग्री या प्रकाशन प्रक्रिया से जुड़े अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देते हुए आशा करती हूं कि भविष्य में भी आप सबके सतत् सहयोग से यह पत्रिका और भी रोचक एवं समृद्ध बनेगी।

पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन के लिए मेरी मंगलकामनाएं।

ऋतु ढिल्लों
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
एवं मुख्य संरक्षक 'हिम-प्रभा'

संपादकीय

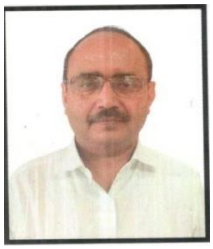

सतीश कुमार गर्ग

'हिम प्रभा' का 87-88वां अंक आपको अर्पित करते हुए बहुत प्रसन्नता हो रही है। भारत के निर्माण और विकास में हिन्दी भाषा का अविस्मरणीय योगदान रहा है। इसी को ध्यान में रखते हुए संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिन्दी को राजभाषा के रूप में अंगीकार किया। इस दिन की स्मृति में भारत सरकार द्वारा प्रतिवर्ष 14 सितंबर से 28 सितंबर तक की अवधि को हिन्दी पखवाड़े के रूप में मनाया जाता है। आज हिन्दी भाषा संवैधानिक रूप से भारत की प्रथम राजभाषा है और भारत की सबसे अधिक बोली व समझी जाने वाली भाषा है।

हिन्दी का वर्चस्व आज इतना विस्तृत और व्यापक हो चुका है कि आज हिन्दी हमारी राष्ट्रीय अस्मिता और भारत की सांस्कृतिक चेतना की प्रतीक बन चुकी है। केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में हिन्दी में काम-काज सुचारू रूप से चल रहा है और नई-नई तकनीकें भी इसमें महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। 14 सितंबर अर्थात हिन्दी दिवस हम सबको राजभाषा कार्यान्वयन में अपने प्रयासों की समीक्षा करने का अवसर प्रदान करता है। अपने सरकारी कार्य में हम जितना अधिक जन सामान्य की भाषा हिन्दी का प्रयोग करने का प्रयास करेगें उतना ही हम हिन्दी के विकास में बड़ा योगदान दे सकते है जो कि हम सब का नैतिक कर्तव्य भी है।

वर्तमान में कोविड-19 महामारी ने जनजीवन को प्रभावित किया है। जिसका प्रभाव इस वर्ष प्रकाशित होने वाले 'हिम-प्रभा' अंक पर भी पड़ा है। कोविड-19 के कारण प्रस्तुत पत्रिका का प्रकाशन ई-पत्रिका के रूप में नए रंग के साथ किया गया है, जो स्वागत योग्य है।

मैं 'हिम-प्रभा' ई-पत्रिका की लेखन सामग्री तथा प्रकाशन से जुड़े अधिकारियों, कर्मचारियों तथा रचनाकारों को बधाई देता हूं जिनके अथक प्रयास से पत्रिका अपने उद्देश्य में अग्रसर है।

सतीश कुमार गर्ग
प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
एवं संरक्षक 'हिम-प्रभा'

पत्रिका प्रकाशन में सहयोगी सदस्य

मुख्य संरक्षक

सुश्री ऋतु ढिल्लों
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

संरक्षक

श्री सतीश कुमार गर्ग
प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)

अध्यक्ष, संपादन मंडल

श्री प्रतीक पाटिल
उप-महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

संपादन सलाहकार समिति

श्रीमती प्रोमिला शर्मा	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री दिनेश शर्मा	वरिष्ठ लेखा अधिकारी
श्री राजेश कुमार शर्मा	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
श्रीमती सीमा सहोता	सहायक लेखा अधिकारी

संपादन एवं आकल्पन

श्री हेतराम जसपाल	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्रीमती सत्यावती	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
श्रीमती समता खानचंदानी	कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक
श्री अजय सिंह	डी.ई.ओ.

प्रकाशित रचनाओं में रचनाकारों के निजी विचार हैं।

सम्पादक मण्डल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है।

नराकास द्वारा हिन्दी पखवाड़ा वर्ष 2019 के अंतर्गत आयोजित अंतरकार्यालयीन प्रतियोगिताओं में कार्यालय के विजेता प्रतिभागी

पुरस्कृत अधिकारी एवं कर्मचारी (ले.प.)

सत्यमेव जयते

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, शिमला (हि.प्र.)

प्रशस्ति पत्र

श्री इन्द्र दीप सिंह चारीवाल के नेतृत्व में प्रधान महालेखाकार (ले.प.) हि.प्र.

में राजभाषा के प्रयोग के लिए वर्ष 2018-19 में किए गए सराहनीय प्रयासों के लिए उन्हें नगर

राजभाषा कार्यान्वयन समिति, शिमला द्वारा प्रथम पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

सुधा सिंह

सहायक निदेशक (रा.भा.) एवं सचिव

न. रा. का. समिति, शिमला

राजभाषा हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य हेतु कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.) को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।

अनुक्रमणिका

क्रमांक	शीर्षक	रचनाकार का नाम	पृष्ठ
	खण्ड 'क' लेख		
1.	कोरोना की धुंध में गुम पयाम...	समता खानचंदानी, क.हि.अ.	2-3
2.	कोविड-19	जे.आर. शर्मा, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	4
3.	दृष्टिकोण बदल दे, प्रसन्नता ही प्रसन्नता	बी.डी. शर्मा, कल्याण सहायक	5
4.	कोरोना, क्या हकीकत क्या फसाना	अरूण कुमार, डीईओ	6-8
5.	राजनीति और राष्ट्रप्रेम	दया सागर, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	9-10
6.	क्या है विपश्यना	विवेक शर्मा, सुपुत्र श्री दिनेश शर्मा, व.ले.अ.	11
7.	"जो सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ भी खूब लड़े सिख धर्म के पांचवे गुरू अर्जन देवी जी"	सरदार रविन्दर सिंह, एमटीएस	12
8.	स्वामी विवेकानन्द - संक्षिप्त जीवनी एवं उपदेश	सोम दत्त शर्मा, पर्यवेक्षक (सेवानिवृत्त)	13-14
9.	निराश्रित	हेतराम जसपाल, व.ले.प.अ.	15-21
10.	ऑनलाइन स्कूल	सिद्धांत खानचंदानी, पुत्र समता खानचंदानी	22-23
	खण्ड 'ख' कविताएं		
11.	सुनो बंधु! कोरोना को भगाना है...	वंदना राणा, पत्नी जगदीश राणा, स.ले.प.अ.	25
12.	मजदूर या मजबूर	बिमल भारती, लेखापरीक्षक	26
13.	कशमकश	विजयलक्ष्मी, सहायक लेखा अधिकारी	27
14.	"... मेरे शहर में"	शैलेश सोनी, वरिष्ठ लेखाकार	28
15.	शिमला की ऐतिहासिक धरोहर- गॉर्टन कैसल	वंदना राणा, पत्नी जगदीश राणा, स.ले.प.अ.	29
16.	सोच रहे है..	सुनील कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	30
17.	मेरा कोई भी दोस्त बूढ़ा नहीं हुआ...	देवेन्द्र कुमार शुक्ला, वरिष्ठ लेखाकार	31
18.	भारत	दया सागर, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	32
19.	मुस्कुराते रहिए	बलराम, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	33
20.	हम औरतें	निर्मला देवी, लिपिक	34

खण्ड 'क'

लेख

कोरोना की धुंध में गुम पयाम...

समता खानचंदानी
(क.हि.अ.)

ग़ज़ल की दुनिया में नाज़ुकी और मासूम तबीयत के बजाय तल्खी और बेबाकी की ज़बान में अपनी धाक जमाना... उस पर तुर्रा यह की खुद को दुकानदार कहते हुए लफ्जों को बेचना... यह दमदार तासीर थी उनकी।वो राहत थे, सुकून थे और अपनी नुमायगी से 'कन्विन्स' कर देने का माद्दा रखते थे।इन सब तमाम ताकतों के साथ मुझे इसलिए भी अज़ीज़ थे क्यूंकि वो मेरी मिट्टी से थे, मेरे शहर से - 'राहत इन्दौरी'। इंदौर, म.प्र. ने कला जगत को कई कोहिनूर दिए- उस्ताद अमीर खां, लता मंगेशकर, किशोर कुमार, जॉनी वाकर, एम एफ हुसैन, उन्ही में एक और - राहत इन्दौरी।

कोरोना के कहर ने दुनिया से बहुत कुछ छीन लिया जिनमें एक नाम इनका भी है।बाक़लम राहत -

'ये सानहा तो किसी दिन गुजरने वाला था
मैं बच भी जाता तो एक रोज मरने वाला था'

और ये हो गया... 11 अगस्त 2020 को गज़लों और मुशायरों का लम्बा दौर बीत गया... कोरोना के कोहरे में ये कहकहां चुप हो गया।

जब वो मंच पे आते थे तो उनकी बड़ी आम सी शक्ल-ओ-सूरत और बेतक्कलुफाना अंदाज़ से सामईन गुमराह हो जाते थे मगर जब मुशायरा शुरू होता तो सामईन औचक रह जाते।सच तो ये है कि उनकी फनकाराना शक्ल और कद किसी और ही जहान से तआल्लुक रखते थे।उनके विषय अलग थे.. तेवर अलग थे..भाषा की तराश और बनावट अलग थी।यक-ब-यक वो तीखी थी.. पर समझ आ जाने पर ज़ुबान पे अपना ज़ायका छोड़ जाती थी।शायद इसीलिए आम-ओ-खास में इतनी लोकप्रिय थी, गोया -

'बुलाती है, मगर जाने का नहीं
ये दुनिया है, इधर जाने का नहीं'

और-

'हमारे मुंह से जो निकले वही सदाक़त हैं,
हमारे मुंह में तुम्हारी ज़ुबान थोड़ी हैं,
सभी का खून हैं शामिल यहाँ की मिट्टी में,
किसी के बाप का हिन्दोस्तान थोड़ी हैं'

राहत का जन्म1 जनवरी 1950 को इंदौर, म.प्र. में एक गरीब परिवार में हुआ।पिता इंदौर कपड़ा मिल में मजदूर थे।जब मिलें बंद हुई, परिवार मुफ़लिसी की ज़द में आ गया और बचपन इम्तेहानों की। तो जनाब राहत इन्दौरी ने इब्तदाई दौर में पेंटिंग से शुरुआत की।आज भी इंदौर की पुरानी गलियों में उनके इस हुनर की नुमाईश होती हैं।शायरी में उनका रुझान क्यों कर हुआ इस बात से ज़रूरी ये बात हुई कि वे शेर कहने लगे और बाक़माल कहने लगे, फिर राहत कुरैशी से राहत इन्दौरी हो गए।मशहूर मरहूम शायर अनवर जलालपुरी ने लिखा हैं कि एक वक़्त था अगर राहत का नाम किसी मुशायरे में नहीं होता तो वो मुशायरा 'ऑल इंडिया मुशायरा' नहीं समझा जाता था।बकौल राहत-

'वो लाख कह दे की ज़मी हूँ आसमां हूँ मैं
मगर मुझको तो पता है कि कुछ नहीं हु मैं'

तो जिनके क़द उम्रों से बड़े होते हैं वो अपने वजूद में पूरे होते हैं।नरमी भी थी... मासूम ख़याली भी...एक बानगी देखिये -

'उसकी कत्थई आँखों में है जंतर-मंतर सब
चाकू-वाकू, छुरियां-वुरियाँ, खंजर-वंजर सब
जिस दिन से तुम रूठी मुझसे रूठे-रूठे हैं
चादर-वादर, तकिया-वकिया, बिस्तर-विस्तर सब'

और -

'उनकी याद आई हैं सांसों ज़रा धीरे चलो
धड़कनों से भी इबादत में खलल पड़ता हैं'

मुशायरों में उनकी मौजूदगी अपना बयां आप थी, और शायरी की दुनिया में उनके जाने के से जो ख़ला ईजाद हुई उसकी भरपाई ये दुनिया खुद ही करें मगर उनका तेवर और अंदाज़ ये 'जनरेशन' ना भूल पायेगी। आख़िर में -

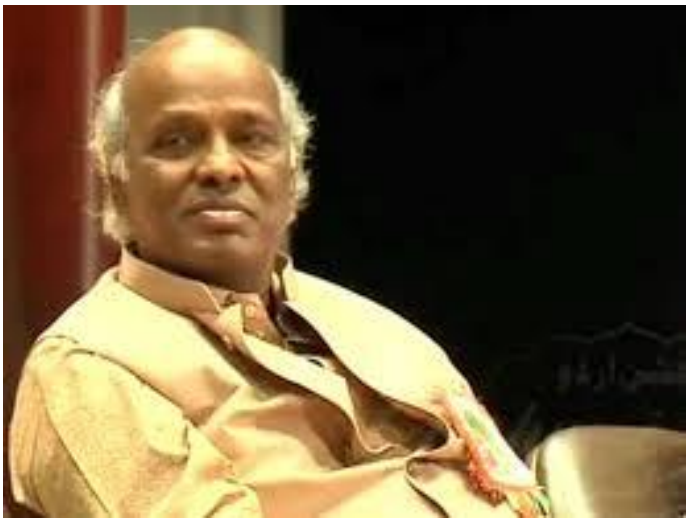

'अपने होने का हम इस तरह पता देते थे
खाक मुट्ठी में उठाते थे, उड़ा देते थे'

कोविड–19

जे.आर. शर्मा
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

कारोना संक्रमण का प्रथम मामला चीन देश के वुहान शहर में दिसम्बर 2019 में पाया गया वहाँ से होते हुए यह संक्रमण विश्व के कई देशों में फैल गया। विश्व स्वास्थ्य संगठन इस संक्रमण को महामारी घोषित करता तब तक यह संक्रमण भयावह रूप धारण कर चुका था। महामारी कोविड–19 (कारोना संक्रमण) के फैलने पर पूरा विश्व अचम्भित हो कर रह गया। सम्पूर्ण विश्व के देशों के नगरों, कस्बों व गांव के लोग अपने अपने घरों के अन्दर सीमित हो कर रह गये। विश्व के कुछ देशों ने इस भंयकर महामारी के प्रकोप की क्रूरता को भांपने में कोताही की जिससे इस महामारी के कारण भारी दुष्परिणाम सहे, कुछ देशों ने इसके प्रकोप को जल्दी भांपा व पूर्ण तालाबन्दी अपने–अपने देशों में घोषित कर दी। इन देशों की स्थिति अगस्त 2020 तक उन के नियन्त्रण में आने लगी हैजिससे उनकी अर्थव्यवस्था भी धीरे–धीरे पटरी पर लौटने लगी है। उन देशों के नागरिकों के चेहरे पर जो अविश्वास और असुरक्षा का भाव था वह अब विश्वास में बदलने लगा।

हमारा देश भी विश्व के उन देशों में शामिल है जिस में संपूर्ण तालाबन्दी महामारी के फैलाव के आरम्भिक दौर में 25/03/20 से लगा दी थी। हमारे देश में तालाबन्दी का पहला चरण दिनाँक 25/03/2020 से 14/04/2020, दूसरा 15/04/2020 से 03/05/2020, तीसरा 04/05/2020 से 17/05/2020, चौथा 18/05/2020 से 31/05/2020 तक चला।

हमारे देश के प्रधानमंत्री जी के आवाह्न पर एक दिन की सम्पूर्ण तालाबन्दी दिनाँक 22/03/20 को की जिसमें देश के नागरिकों से आग्रह किया गया कि इस दिन सुबह 7 बजे से रात 9 बजे तक कोई भी देश का नागरिक आवश्यक सेवाओं के सेवादारों को छोड़ कर अपने घरों से नही निकलेगा तथा रात नौ बजे अपनी–अपनी बालकनी में खडें हो कर दीप जलायें। प्रधानमंत्री के इस दीप जलाने के आग्रह की कई आलोचकों ने आलोचना की व तर्क दिये कि क्या केवल दीप जलाने से कोविड–19 महामारी चली जायेगी ऐसा सोचना हमारे जैसे विकासशील देश के नागरिकों के लिए गलत होगा न प्रधानमंत्री जी का यह आशय रहा होगा कि केवल बालकनी या छत पर दीप जलाने से कारोना महामारी चली जायेगी। यह केवल मात्र एक ऐसा आग्रह था कि दीप जला कर अपने मन में यह विश्वास पैदा करें कि हम देशवासी सकारात्मक उर्जा के साथ कोविड–19 महामारी से लड़ेगे व एक दिन इस पर विजय अवश्य पायेगें। यह सकारात्मक विश्वास हमें भरोसा दिलाता है कि हम एक दिन अवश्य कामयाब होगें। इसके विपरित यदि हमारे मन में भय और निराशा ही निराशा होगी तो हम हर मुसीबत से हारते जायेगें तथा हमारा जीवन गर्त की ओर चला जायेगा।

कारोना महामारी के दौरान देश व्यापी तालाबन्दी और उस से उत्पन्न स्थिति के कारण केवल एक बात सामने निकल कर आई है, कि हर मुसीबत के समय हमें सकारात्मक सोच रखनी चाहिए तथा अपने देश के तन्त्र में भरोसा रखना चाहिए कि तन्त्र का हर हिस्सा अपना–अपना योगदान देगा और वह योगदान महामारी कोविड–19 को भी दूर भगायगा तभी हमारी आस्था का दीप प्रज्जवलित करना सार्थक सिद्ध होगा अन्यथा यदि हम विश्वास व भरोसा नहीं रखेगें तो हम हर पल भय व असुरक्षा में ही जियेगें फिर हमारा तन्त्र कितने भी सार्थक प्रयास कर ले सब व्यर्थ लगने लगता है।

हमारे देश की सरकार, कुशल वैज्ञानिक व कर्मठ चिकित्सक इस महामारी का टीका तैयार करने में बड़ी लगन के साथ जुटे है। हमें आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि ये सभी सफल हो कर उभरेगें व इस महामारी को दूर भगायेगें।

दृष्टिकोण बदल दे, प्रसन्नता ही प्रसन्नता

बी0डी0शर्मा,
कल्याण सहायक

संसार में दु:ख क्या है और सुख क्या है, इसकी परिभाषा कर पाना कठिन है। वस्तुत: यहां न तो कुछ सुख है और न कुछ दु:ख। घटनाऐं अपने ढ़ंग से घटित होती रहती है और वस्तुएं अपने तरीके से बदलती रहती हैं। आने और जाने का, लाभ और हानि का परिवर्तन यहां अनवरत रूप से चल रहा है। जो वस्तु अभी जिस रूप में है, अगले ही क्षण वह वैसी न रह जायेगी। तब जिस प्रकार उस क्षण उसे सुखद माना जा रहा था वैसा कुछ समय बाद न माना जा सकेगा। तब यह कैसे कहा जाए कि वह वस्तु या स्थिति सुख रूप है या दु:ख रूप।

प्रात:काल का सूर्य सुहावना लगता है और उसकी धूप तापने को जी करता है, किन्तु कुछ समय बाद दोपहर की कड़ी धूप और कड़ी चमक कष्टकारक लगती है और उससे बचने के लिए छाया तलाश करनी पड़ती है। तब यह कैसे कहा जाए कि सूर्य और उसकी धूप सुखद है या दु:खद। यह परिस्थितियों पर निर्भर है ।

भूख में भोजन की उत्कट लालसा रहती है। रूखा-सूखा भी स्वादिष्ट लगता है। किन्तु पेट भरा होने की दशा में स्वादिष्ट भोजन भी अरूचिकर लगता है और उसकी ओर देखने को मन नहीं करता। वास्तव में भोजन न तो स्वादिष्ट होता है और न ही अस्वादिष्ट, यह एक पदार्थ मात्र है। भूख के अनुरूप व कभी प्रिय लगता है और कभी अप्रिय। यदि भोजन की अपनी कुछ विशेषता होती तो वह सदा एक जैसी बनी रहती ।

हम धनी है या निर्धन इसका कोई पैमाना नहीं। यदि हम अपनी तुलना किसी साधन सम्पन्न धनी के साथ करते है तो पाते है कि अपनी स्थिति निर्धनों जैसी दयनीय है, किन्तु यदि निर्धनों और अभावग्रस्तों के साथ अपनी तुलना करने लगे तो प्रतीत होगा कि हम कितने साधन संपन्न धनवान और भाग्यवान है।

दु:खों से निवृत्ति पाने और सदा सुखी रहने के लिए अमुक प्रकार की परिस्थितियां प्राप्त होना आवश्यक है, यह नहीं सोचा जाना चाहिए वरन् अपनी तुलनात्मक चिन्तन करने की शैली को बदलना चाहिए। अपने से छोटे व पिछड़े हुए लोग यदि दृष्टि में रहें तो जो मिला है वह भी सुखद और पर्याप्त प्रतीत होता रहेगा और अपने को सुखी अनुभव करने की मन: स्थिति सदा ही बनी रहेगी।

"साधन में सुख नहीं बांवरे सुख तो मन में होय ।"
हानि लाभ का हार जीत का फिर क्यों रोना रोय ।।
मिल जाए संतोष संपदा, तो सुख अभाव में आए
पगले दृष्टि बदल यदि जाए ।।

कोरोना, क्या हकीकत क्या फसाना

अरूण कुमार
डीईओ ग्रेड-बी

जिस प्रकार हमें भगवान या भूत नहीं दिखाई देते परन्तु उनमें हमारी आस्था/डर होता है तो हम उनको अनुभव करने की कोशिश करते है और उनको सर्वशक्तिमान समझते है। ठीक ऐसे ही यह कोरोना वायरस विज्ञान के शब्दकोष में उपलब्ध था परन्तु सामान्य लोगों ने इसके बारें में नहीं सुना था और न ही जानते थे। भला हो हमारे पड़ोसी देश चीन का जिसके वुहान प्रान्त के एक लैब से निकल कर यह कोरोना नाम का वायरस पूरे विश्व में फैल गया तथा आज इस धरती के हर एक आदमजात को इसके बारे में कमोबेश पता है या जिसे पता नहीं है वो पता करने में लगे हुए है।

कोरोना वायरस का संबंध वायरस के ऐसे परिवार से है जिसके संक्रमण से जुकाम, खॉसी, सांस लेने में तकलीफ, बुखार जैसी समस्याएं होती है। यह एक साधारण फ्लू जैसा असर हमारे शरीर पर करता है परन्तु जो कोरोना वायरस दिसम्बर महीने के आस-पास हमें और इस विश्व को चीन के एक लैब से प्राप्त हुआ है उसकी बात ही निराली है, यह विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा एक महामारी घोषित किया जा चुका है विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इस कोरोना वायरस से ग्रसित लोगों केा देखकर इसके कुछ लक्षण बताये है जैसे कि:-

1 बुखार के साथ सर्दी, खॉसी तथा सांस लेने में तकलीफ
2 स्वाद का अभाव
3 शरीर और सिर में दर्द
4 डायरिया की समस्या

यहां समस्या यह है कि इस आम सी दिखने वाली बीमारी का लक्षण आज इतना भयावह है कि पूरे विश्व में 15 अगस्त 2020 तक 2 करोड़ 16 लाख रोगी थे, 7 लाख 75 हजार लोगों की मृत्यु हो चुकी है तथा इस रोग से 1 करोड़ 36 लाख लोग ठीक हो चुके है तथा यह आंकडा अभी बढ़ता ही जा रहा है। सिर्फ भारत में इस रोग से लगभग 27 लाख लोग ग्रसित है तथा 50921 लोगों की मृत्यु हो चुकी है। इस क्रम में भारत का स्थान तीसरा है तथा पहले स्थान पर अमेरिका व दूसरे पर ब्राजील है। ऐसा इसलिए है कि अभी तक इस तथाकथित महामारी से निपटने के लिए कोई भी कारगार वैक्सीन या दवाई नही बन पाई है हांलाकि रूस, अमेरिका, चीन तथा भारत जैसे देश इसका उपचार ढूंढ़ने में लगे हुए है।

भारत के स्वास्थ्य मंत्रालय ने विश्व स्वास्थ्य संगठन के कहने पर इस बिमारी/वायरस से बचने हेतु कुछ दिशा निर्देश जारी किये है, जो निम्न है:-

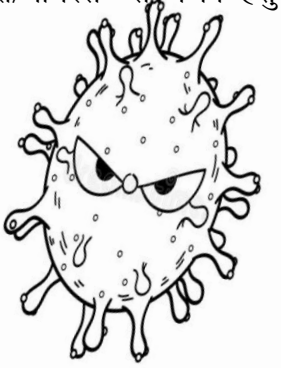

1 सामाजिक दूरी अपनाना
2 समय समय पर साबुन से हाथ साफ करना तथा सेनिटाइज करना
3 मास्क पहनना
4 खांसते और छींकते समय मुंह को ढ़क के रखना
5 अंडे-मांस को न खाना (बाद में इसे बदल दिया गया है)
6 कोरोना वायरस के लक्षण होने पर चिकित्सक से तुरंत मिलना, इत्यादि

उपर्युक्त बचाव के साथ-साथ सरकार ने पूरे भारत में लगभग 2 महीने का पूर्ण लॉक डाउन लगाया तथा लोगों की सुविधानुसार समय-समय पर इसमें बदलाव भी किये, परन्तु इस महामारी पर अभी तक पूर्ण नियंत्रण नहीं हो पाया है।

इस कोरोना वायरस ने पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था तथा जान माल को भारी नुकसान पहुंचाया है इससे अपना देश भी अछूता नहीं है:-

1 लॉक डाउन की वजह से कल-कारखाने, वाहन दुकाने बंद हुई, उत्पादन बंद हो गया

2 मशीने, वाहन, सामान प्रयोग न होने से रखे-रखे खराब हो गये।

3 मजदूर, कृषक न होने से फसलें तबाह हो गई या खेती ही नहीं हो पाई।

4 दिहाड़ी मजदूरों का भरण पोषण मुश्किल हो गया, बहुत लोग बेरोजगार हो गए।

5 शिक्षण संस्थान के बंद होने से शिक्षा और विद्यार्थियों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा

6 सरकार के खर्चों में कमी नहीं हुई बल्कि लोगों के भरण पोषण हेतु सहायता देना तथा कोरोना वायरस टेस्ट व इलाज हेतु अस्पतालों व मरीजों को सुरक्षित अलग रखने हेतु भवनों के बन्दोवस्त में अत्यधिक धन खर्च करना पड़ा।

उपर्युक्त कारणों से सरकार व लोगों को बिना आमदनी के अत्यधिक खर्च करना पड़ा जिससे अर्थव्यवस्था चौपट हुई।

ऐसा हरगिज नहीं है कि इस महामारी के दौर में हमें सिर्फ नुकसान ही हुआ हो, कुछ फायदे भी हुए है:- लॉक डाउन के कारण कल कारखाने बंद थे, वाहन बंद थे जिसके कारण पर्यावरण, नदी-तालाब के पानी इत्यादी लगभग स्वच्छ हो गए, ओजोन परन्तु के छिद्र में काफी सुधार हुआ है, जानवरों में प्रजनन तेज हुआ जिससे उनकी जनसंख्या बढ़ी है।

अब मैं आपको कुछ ऐसे पहलू से रू-ब-रू करवाता हूं जो आपके मन में कोरोना वायरस के प्रति कुछ संदेह पैदा जरूर करेगा तथा विश्व स्वास्थ्य संगठन तथा अपने देश की सरकार की भूमिका पर कुछ सवाल भी उठायेगा, जैसे कि:-

1 एक तरफ सरकार कहती है कि यह वायरस वुहान, चीन के लैब से निकलकर पूरे विश्व में फैला तो सवाल यह है कि यह वायरस वहां लैब में क्यों था तथा इसका वहां क्या काम था?

2 चीन से फैलकर पूरे विश्व में पहुंचा परन्तु आज पूरे विश्व में कोरोना वायरस से ग्रसित देशों में चीन शीर्ष 10 में भी नहीं है जबकि अमेरिका, ब्राजील, भारत जैसे देश शीर्ष में है ऐसा क्यों?

3 चीन के इस वायरस ने पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था को चौपट कर दिया है परन्तु चीन इस वायरस से बचाव हेतु ग्लब्स, मास्क, सेनिटाइजर तथा पीपीई किट बनाकर दूसरे देशों को निर्यात कर रहा है?

चीन से फैला परन्तु चीन के आधे से अधिक राज्यों में इससे कोई समस्या नहीं हुई। चीन के कुछ पड़ोसी देश इससे आज भी अछूते है परन्तु पूरा विश्व बेहाल है, ऐसा क्यों?

4 विश्व स्वास्थ्य संगठन को सबसे अधिक धन देने वाला अमेरिका इस आपदा के बाद इससे अलग क्यों हो गया?

5 विश्व स्वास्थ्य संगठन पहले कहता है कि मास्क लगाइये, नॉनवेज मत खाइये और अब कहता है कि मास्क लगाने या नॉनवेज न खाने से इस वायरस को नहीं रोका जा सकता है साथ ही विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इस वायरस से इलाज हेतु कुछ ऐसी दवाईयों के उपयोग की अनुमति प्रदान की है जिसे कुछ बड़े देशों ने बैन किया हुआ है क्योंकि उनके सेवन से आम लोगों में खुदकुशी करने की चाह, अवसाद, किडनी, लिवर की गंभीर समस्याएं उत्पन्न हो रही थी?

6 इस कोरोना वायरस से 90 प्रतिशत वही लोग मर रहे है जो अपना ईलाज करवाने किसी अस्पताल में जाते है जबकि जो लोग अपने घर पर ही इसका ईलाज कर रहे है उनमें मृत्यु दर काफी कम है या नहीं है, ऐसा क्यों?7

जब इस बिमारी की दवा या वैक्सीन नहीं बनी हुई है तो इसके ईलाज में लोगों के लाखों रूपये कैसे और क्यों खर्च हो रहे है?

8 विश्व के 99 प्रतिशत देश विश्व स्वास्थ्य संगठन को अनुसरण करते है और उनकी हालत कुछ ठीक नहीं है परन्तु कुछ देश ऐसे भी है जो सिर्फ अपनी प्राचीन चिकित्सा पद्धति पर विश्वास करते है और वहां कोरोना वायरस की दाल नहीं गली है ?

9 अपने भारत में मास्क लगाना आज भी कानून है जबकि विज्ञान कहता है कि कोरोना वायरस के कण नैनों आकार के है जिसे किसी कपड़े या एन 95 मास्क से रोका नहीं जा सकता तथा जो मास्क इसे रोक सकता है उसे पहनने से आदमी को सांस लेने में समस्या होगी व आदमी दम घुटने से मर भी सकता है या उसे अस्थमा जैसी बीमारी भी हो सकती है तो सरकार मास्क लगाने पर इतना जोर क्यों दे रही है ?

10 जापान के एक चिकित्सक वैज्ञानिक ने यह दावा किया है कि कोरोना वायरस प्राकृतिक न होकर कृत्रिम है क्योंकि हर वायरस किसी खास तरह के वातावरण में सक्रिय रहता है और विपरीत वातावरण में वह निष्क्रिय जो जाता है परन्तु यह वायरस विश्व के हर मौसम में एक समान निष्क्रिय है, ऐसा क्यों ?

इस वायरस से इतना सर्वनाश होने के बावजूद भी अभी तक विश्व स्वास्थ्य संगठन ने या किसी भी संस्था ने विश्व स्तर पर कोई संस्था बनाकर इस वायरस की जांच नहीं की है, किसी ने चीन से इस पर कोई सवाल नहीं किया सिर्फ अपनी रोटी सेकने में लगें रहे इसके विपरीत भारत के कुछ आयुर्वेदाचार्यों तथा कुछ चिकित्सकों ने इस वायरस को एक साधारण "फ्लू" वायरस कहा तथा इसे एक षडयंत्र भी कहा और पौष्टिक भोजन, नियमित व्यायाम से इसे खत्म/नियंत्रण करने की बात कही तथा कुछ उदाहरण भी पेश किये परन्तु सरकार ने इनको गंभीरता से नहीं लिया, क्यों ?

कुछ लोगों ने तो चिकित्सा जगत पर सवाल उठाया है कि इस वायरस की आड़ में कुछ चिकित्सक मरीजों के शरीर के अंग को बेच रहे है तथा परिवारजनों को शव थैले में भर के दे रहे है या स्वयं ही शव को डिस्पोज कर रहे है क्योंकि उनको पता है कि वायरस के संक्रमण से बचने के लिए लोग इसे खोल कर न देखेगें और न ही छूएंगें।

अत: उपर्युक्त बातों को देखते हुए यह वायरस मुझे संशय में डालता है कि मैं क्या करू किसकी बात को सही मानू किसको झूठ, सरकार के साथ रहूं या सरकार पर उंगली उठाउ अगर मैं इससे संक्रमित होता हूं तो अस्पताल जा कर अपना ईलाज करवाऊं या घर में ही क्वारनटीन हो कर अपना ईलाज करूं, क्योंकि आज जो अस्पताल से मरीजों द्वारा या उनके परिजनों द्वारा बनाया गया विडियों देखता हूं तो काफी डर लगता है।

इस कोरोना वायरस की क्या हकीकत है ये मुझे नहीं मालूम लेकिन मैं बचाव में ही सुरक्षा समझता हूं तथा सभी अपनों को इस वायरस से सुरक्षा हेतु बचाव के सरकारी व निजी उपायों जैसे हाथ धोना, मास्क पहनना, आयुर्वेदिक पेय, गर्म भोजन का उपयोग करने की सलाह देता हूं क्योंकि यह हमें कोरोना से बचाये या न बचाये परन्तु कुछ साधारण बीमारी जैसे फ्लू, हैजा, प्रदूषण इत्यादि से तो बचायेगा और हम लोगों में अच्छी आदत का भी विकास करेगा और हां डॉक्टर की फीस भी बचायेगा।

बचाव में सुरक्षा है सुरक्षा में बचाव है।

राजनीति और राष्ट्रप्रेम

लेखक:-दया सागर
वरिष्ट लेखा परीक्षक
आर्थिक क्षेत्र- गैर सा. उपक्रम

राजनीति राष्ट्रविकास के लिए बहुत आवश्यक है। राजनीति में व्यक्ति को अपने निजी कार्यों को भूलकर , अपने व्यक्तिगत लाभ को त्यागकर, देश की सेवा तथा नागरिकों की भलाई के कार्य में अपना जीवन लगाना पड़ता है। पहले व्यक्ति राष्ट्रवाद की भावना से प्रेरित होकर देश की प्रगति तथा देश की सेवा के लिए राजनीति में प्रवेश करता था। उसका केवल एक ही लक्ष्य होता था कि हम किस तरह देश की सेवा करें तथा एकता और अखंडता को बनाए रखें।

आज राजनीति का स्वरूप पूरी तरह से बदल चुका है। हमारे देश में लगभग 2600 राजनैतिक दल पंजीकृत है और हर राजनैतिक दल की एक अलग विचारधारा है। ये बात भी सही है कि प्रत्येक दल को किसी एक विचारधारा के लोगों का मत पाने के लिए एक विचारधारा की आवश्यकता होती है। लेकिन कुछ राजनैतिक दल मत पाने के लिए अलगाववाद की विचारधारा को बढ़ावा देकर देश की एकता व अखंडता के साथ खिलवाड़ कर रहे है। कुछ लोग इन राजनैतिक दलों के प्रतिनिधि बनकर सामाजिक संचार माध्यमों के द्वारा देश की संस्कृति को बदनाम कर रहे है। इन लोगों को कोई सामाजिक समस्या हो सकती है इसलिए इनका विरोध करना भी तर्कसंगत हो सकता है। हम सभी समाज में किसी न किसी समस्या से ग्रसित है तथा समय- समय पर हम इसका विरोध भी करते है। लेकिन इन समस्याओं के कारण हम देश में उन अलगाववादियों का समर्थन नहीं कर सकते, जो देश में आतंकवाद फैला रहे है और हमारी संस्कृति को नष्ट कर रहे है।कुछ लोग तो स्वार्थवश इन दलों के प्रतिनिधि का कार्य करते है तथा दूसरों दलों के नेताओं पर हमेशा टिपण्णी करते है। वैसे तो हर किसी को अपने विचारों की अभिव्यक्ति की आजादी हमारे संविधान ने प्रदान की है, लेकिन हमारी सत्यनिष्ठा देश के प्रति होनी चाहिए या ऐसे नेताओं के प्रति जो देशवाशियों के हित के लिए सोचता है और कार्य करता है।

राजनीति आसान नहीं है , राजनीति में पैर ज़माने के लिए लोगों को बहुत मेहनत करनी पड़ती है। सब लोगों के साथ लेकर चलना पड़ता है। इसके लिए बड़ी काबिलियत की जरूरत है। देश सेवा के लिए लोगों को जोड़ना अच्छी बात है। लेकिन सत्ता पाने के लिए लोगों कोलड़वाना और अपने देश की एकता अखंडता को खतरे में डालना उचित नहीं है। यहाँ तक कि ये लोगों की निजी जिंदगी में दखल देते है, उनके परिवार में कलह करवाते है , उनकी जासूसी करते है तथा अपने प्रतिद्वंदी के राजनैतिक वर्चस्व को समाप्त करने का कोई मौका नहीं छोड़ते। नेता एक दल छोडकर दूसरे दल में चला जाये तो भी नेता ही रहता है लेकिन अगर कोई व्यक्ति अगर किसी दूसरे दल को मतदान करता है या किसी वजह से वो नेता जीत नहीं पाते तो कुछ नेता तो लोगों के साथ सहयोग भी नहीं करते तथा उन्हें ये कहकर दुत्कार देते है कि जिसको जिताया है उसके पास जाओं। थोडा बहुत गुस्सा तो

जायज है क्योंकि चुनाव लड़ने के लिए नेताओं को लाखों रूपये खर्च करने पड़ते है। यहाँ तक की सरकार बनाने के लिए विधायकों और सांसदों को बंधक भी बना लिया जाता है , उन्हें और उनके परिवार को धमकियाँ दी जाती है।

जब सरकार चलाने वाले लोगों को इतनी समस्या का सामना करना पड़ता है , तो देश के साधारण व्यक्ति की क्या हालत होगी।

इसलिए नेताओं को इन सब समस्याओं से ऊपर उठकर कार्य करना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को समान समझकर उनका सहयोग करना चाहिए चाहे उन्होंने उन्हें मतदान दिया हो या नहीं क्योंकि उनका राजनीति में आने का उदेश्य ही लोगों और देश की भलाई के लिए कार्य करना होता है। जैसे सीमा पर खड़ा सैनिक किसी जाति, धर्म, दल और राज्य के बारें में सोचें बिना देश के दुश्मनों से लोहा लेता है। उसका केवल एक ही उद्देश्य होता है देश की सुरक्षा।

दार्शनिक प्लूटो ने कहा था कि देश का नेता दार्शनिक व तत्वज्ञानी होना चाहिए तथा ज्ञान का प्रेमी होना चाहिए क्योंकि दार्शनिक राजा ही भेदभाव से उठकर सभी का सम विकास कर सकता है तथा अपने देश की संस्कृति और ज्ञान-विज्ञान को बढ़ावा देकर अपने देश का नाम ऊँचा कर सकता है। भारत के पास अतुल्य ज्ञान और संस्कृति है। भारत का ज्ञान –विज्ञान और ग्रन्थ सबसे श्रेष्ठ है। भारत के पास शौर्य और वीरता की भी कोई कमी नहीं है। तभी पूरा विश्व जीतने वाला सिकंदर हार के साथ अंत समय में ज्ञान लेकर मृत्यु को प्राप्त हुआ। धन-दौलत, पद-प्रतिष्ठा जरुरी है पर इतनी भी जरुरी नहीं कि इसके लिए हजारों लाखों बेकसूरों का खून बहाया जाये। लेकिन हमारे देश के कुछ गद्दारों को ये बात भी समझ नहीं आती। मृत्यु सभी की निश्चित है लेकिन लोग ये सोचकर बैठे हुए है कि इनकी कभी मृत्यु नहीं होगी और हमेशा इनका ही राज होगा। कितने ही शक्तिशाली राजा आये, लेकिन हमेशा के लिए किसी का राज नहीं रहा। कईयों के वंशज तो आज बहुत दयनीय स्थिती में है। लेकिन कुछ राजा समाज की भलाई के लिए कार्य करके ,हमारे दिलों में अमर हो गए। अगर आज हम सबकी भलाई के लिए कार्य करते है तो आने वाली पीढ़ियों को इससे फायदा होगा। अगर हमारे नेता ऐसे राज्य की स्थापना करें जहाँ कोई भूखा न रहे और सभी को रोजगार मिले तो हमारे नेता भी लोगों के दिलों में अमर हो जायेंगे। हम इतने शक्तिशाली बने कि दुश्मन हमारी तरफ आँख उठाकर भी न देख सकें। अपने देशवासियों को शिक्षित और आत्मनिर्भर बनाएं। देश में श्रेष्ठ व्यक्ति , श्रेष्ठ ज्ञान और श्रेष्ठ विचारधारा का विकास इसलिए जरुरी है ताकि देश का श्रेष्ट विकास हो सके। अगर योग्यता को छोडकर हम राज्य, दल, जाति, धर्म तथा स्वार्थ के लिए लोगों को चुनेंगे तो अलगाव की स्थिती बढ़ती जाएगी और पूरे देश को इसका नुकसान उठाना होगा ।

हमें भेदभाव की खाई को ख़त्म करना होगा तभी देश में भाईचारा और एकता में अनेकता सही शब्दों में स्थापित की जा सकती है। देश की सुरक्षा, प्रगति और स्वाभिमान के लिए हम सब एक है और अगर कोई भी देश हमारी एकता,अखंडता और स्वाभिमान को नुकसान पहुचाने की कोशिश करेगा तो हम सब मिलकर ईंट का जवाब पत्थर से देंगे।

जय हिन्द जय भारत

क्या है विपश्यना

विवेकशर्मा
सुपुत्र श्री दिनेश शर्मा
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

विपश्यना प्राचीन ध्यान विधि है जिसे भगवान बुद्ध ने पुनर्जीवित किया। यह एकमात्र ऐसी चमत्कारिक ध्यान विधि है जिसके माध्यम से सबसे ज्यादा लोगों ने बुद्धत्व को प्राप्त किया या ज्ञान को प्राप्त किया। वर्तमान में विपश्यना का जो प्रचलित रूप है, उस पर हम किसी भी प्रकार की कोई टिप्पणी नहीं करना चाहते है।

विपश्यना आत्मनिरीक्षण की एक प्रभावकारी विधि है। इससे आत्मशुद्धि होती है। यह प्राणायाम और साक्षीभाव का मिला-जुला रूप है। दरअसल, यह साक्षीभाव का ही हिस्सा है। चिरंतन काल से ऋषि-मुनि इस ध्यान विधि को करते आये है। भगवान बुद्ध ने इसको सरलतम बनाया। इस विधि के अनुसार अपनी श्वास को देखना और उसके प्रति सजग रहना होता है। देखने का अर्थ उसके आवागमन को महसूस करना।

विपश्यना बड़ा सीधा-सरल प्रयोग है। अपनी आती-जाती श्वास के प्रति साक्षीभाव। प्रारम्भिक अभ्यास में उठते-बैठते, सोते-जागते, बात करते या मौन रहते किसी भी स्थिति में बस श्वास के आने जाने को नाक के छिद्रों में महसूस करे। जैसे अब तक आप अपनी श्वासों पर ध्यान नहीं देते थे लेकिन अब स्वाभाविक रूप से उसके आवागमन को साक्षी भाव से देखें या महसूस करें कि ये श्वास छोड़ी और ये ली। श्वास लेने और छोड़ने के बीच जो अन्तराल है, उस पर भी सहजता से ध्यान दें। जबरन यह कार्य नहीं करना है। बस, जब भी ध्यान आ जाए तो सब कुछ बंद करके इसी पर ध्यान देना ही विपश्यना है।

श्वास के अलावा दूसरे चरण में आप बीच बीच में यह भी देखें कि यह एक विचार आया और गया, दूसरा आया । यह क्रोध आया और गया । किसी भी कीमत पर उलझना नहीं है। बस चुपचाप देखना है कि आपके मन, मस्तिष्क और शरीर में किसी तरह की क्रिया और प्रतिक्रिया होती रहती है ।

विपश्यना विधि नहीं, स्वभाव है: विपश्यना को करने के लिए किसी भी प्रकार के तामझाम की या एकांत में रहने की जरूरत नहीं। इसका अच्छा अभ्यास भीड़ और शोरगुल में रहकर ही किया जा सकता है। बाइक चलाते हुए, बस में बैठे, ट्रेन में सफर करते, कार में यात्रा करते, राह के किनारे, दुकान पर, ऑफिस में, बाजार में, घर में और बिस्तर पर लेटे हुए कहीं भी इस विधि को करते रहो और किसी को पता भी नहीं चलेगा कि आप ध्यान कर रहें है।

विपश्यना क्यों करें: शरीर और आत्मा के बीच श्वास ही एक ऐसा सेतु है, जो हमारे विचार और भावों को ही संचालित नही करता है बल्कि हमारे शरीर को भी जिंदा बनाए रखता है। श्वास जीवन है। ओशो कहते है कि यदि तुम श्वास को ठीक से देखते रहो, तो अनिवार्य रूपेण, अपरिहार्य रूप से, शरीर से तुम भिन्न अपने को जानने लगोगे। जो श्वास को देखेगा, वह श्वास से भिन्न हो गया, और जो श्वास से भिन्न हो गया वह शरीर से तो भिन्न हो ही गया। शरीर से छूटो, श्वास से छूटो, तो शाश्वत का दर्शन होता है। उस दर्शन में ही उड़ान है, ऊंचाई है, उसकी ही गहराई है। बाकी न तो कोई ऊंचाइयां है जगत में, न कोई गहराइयाँ है जगत में। बाकी तो व्यर्थ की आपाधापी है।

'जो सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ भी खूब लड़े सिख धर्म के पांचवे गुरू अर्जन देव जी'

सरदार रविन्दर सिंह
एम0टी0एस0

सिख धर्म के पाँचवे गुरू अर्जन देव जी सर्वधर्म समभाव के प्रखर पैरोकार होने के साथ साथ मानवीय आदेशों के लिए आत्म बलिदान करने वाले एक महान आत्मा थे। उनका जन्म सिख धर्म के चौथे गुरू, गुरू राम दास जी व माता भानीजी के घर 15 अप्रैल 1563 को गोईदवाल अमृतसर पंजाब में हुआ।

गुरू अर्जन देव जी की निर्मल प्रवृत्ति, सहृदयता कर्तव्यनिष्ठता तथा धार्मिक एवं मानवीय मूल्यों के प्रति समर्पण भावना को देखते हुए गुरू राम दास जी ने 1581 में पाँचवे गुरू के रूप में उन्हे गुरू गद्दी पर सुशोभित किया। इस दौरान उन्होंने गुरू ग्रन्थ साहिब का संपादन किया, जो मानव जाति को इस पंथ की सबसे बडी देन है। संपूर्ण मानवता में धार्मिक सौहार्द पैदा करने के लिए अपने पूर्ववर्ती गुरूओं की वाणी को जगह जगह से एकत्र कर उसे धार्मिक ग्रंथ में परिष्कृत किया। गुरू जी ने स्वयं के उच्चरित 30 रागों में 2218 शब्दों को भी श्री गुरू ग्रंथ साहिब में दर्ज किया है।

यह उन दिनों की बात है जब बालाजी और कृष्ण पंडित कथाऐं करके लोगों को खुश करते हुए अपना जीवन यापन किया करते थे। एक दिन वे गुरू अर्जन देव जी के दरबार में उपस्थित हुए और प्रार्थना करने लगे कि महाराज, हमारे मन में शांति नहीं है। आप ऐसा कोई उपाय बताएं जिस से हमें शांति प्राप्त हो। तब गुरू अर्जुन देव जी ने कहा, अगर मन की शांति चाहते हो तो जैस आप लोगों को कहते हो तो आप भी उसी प्रकार अनुसरण करो, अपनी कथनी पर अमल किया करो। परमात्मा को संग जानकर उसे याद रखा करों। अगर आप सिर्फ धन इक्टठा करने के लालच में कथा करोगे तो आप के मन को शांति कदापि प्राप्त नहीं होगी। बल्कि उल्टा आपके मन का लालच बढ़ता जाएगा और पहले से भी ज्यादा दुखी हो जाओगे।

कथा करने के अपने तरीके में बदलाव कर निष्काम भाव से कथा करो, तभी तुम्हारे मन में सच्ची शांति महसूस होगी। अपने ऐसे पवित्र वचनों से दुनिया को उपदेश देने वाले गुरू जी का मात्र 43 वर्ष का जीवनकाल अत्यंत प्रेरणादायी रहा। वे आध्यात्मिक चिंतक एवं उपदेशक के साथ ही समाज सुधारक भी थे। अपने जीवन काल में गुरूजी ने धर्म के नाम पर आडंबरों और अंधविश्वास पर कड़ा प्रहार किया। सती प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ भी वे डटकर खड़े रहे। गुरू अर्जन देवी जी ने "तेरा किया मीठा लागे, हर नाम पदारथ नानक मागें" शब्द का उच्चारण करते हुए सन् 1606 में अमर शहीदी प्राप्त की।

"वाहिगुरू का खालसा, वाहिगुरू जी की फतेह"

स्वामी विवेकानन्द-संक्षिप्त जीवनी एवं उपदेश

सोम दत्त शर्मा
पर्यवेक्षक (सेवानिवृत्त)

स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी सन् 1863 ई. के दिन प्रातः 6 बजकर 33 मिनट पर मकर संक्रांति के पवित्र दिन कलकत्ता में हुआ। स्वामी जी के पिता का नाम विश्वनाथ दत्त और माता का नाम भुवनेश्वरी देवी थी। उनका नाम नरेन्द्रनाथ रखा गया जो बाद में स्वामी विवकानन्द कहलाऐ। उम्र बढ़ने के साथ-साथ नरेन्द्रनाथ स्कूल में वाद-विवाद और अलोचना सभाओं में मणि की तरह चमके, खेल-कूद में सभी से आगे निकले भजन संगीत में प्रथम श्रेणी के गायक और नाटक में कुशल अभिनेता बने एवं विभिन्न प्रकार की पुस्तकों के अध्ययन से अल्प अवस्था में ही उनमें गहन गंभीर चिंतन शक्ति जागी। मैट्रोपोलिय स्कूल में प्रथम श्रेणी में परीक्षा में उत्तीर्ण होकर पहले कलकत्ता स्थित प्रैसिडेन्सी कॉलेज में दाखिल हुए फिर जनरल असेंबली (वर्तमान में स्काटिश चर्च कॉलेज) में दाखिल हुए।

प्रोफेसर विलियम हेस्ट्री ने वर्डस्वर्थ की कविता में परमोच्च आंनद की व्याख्या की तो प्रोफेसर हेस्ट्री ने बताया कि कलकत्ते में गंगा के समीप दक्षिणेश्वर में एक संत रामकृष्ण परमहंस निवास करते हैं। जिनकी वैसी ही परमोच्च आदंद में समाधि होती है। नरेन्द्रनाथ श्री रामकृष्ण परमहंस देव से दक्षिणेश्वर मिलने गए और उनसे सीधा प्रश्न किया "आपने कभी ईश्वर का साक्षात्कार किया है" उत्तर भी उतना ही सीधा मिला "हां" मैं उनका दर्शन पाता हूं। तुम्हें जैसा देखता हूं उससे भी स्पष्ट ईश्वर को देखता हूं तुम अगर देखना चाहो तो तुम्हें भी दिखा सकता हूं। नरेन्द्र के कंधे पर रामकृष्ण परमहंस देव ने अपने दाहिने पैर का स्पर्श किया तो वह भाव समाधि में चला गया। चारों तरफ प्रकाश वहां एक अलौकिक शांति थी। इस शक्तिपात को नरेन्द्र ने छौटा-मोटा चमत्कार समझा और दक्षिणेश्वर न जाने का निर्णय लिया।

नरेन्द्र की परीक्षा की घड़ी आ खड़ी हुई। पिता विश्वानाथ दत्त का निधन हो गया। पूरे परिवार के पालन-पोषण की जिम्मेवारी नरेन्द्र पर आ पड़ी। नौकरी ढूढ़ने की बहुत कोशिश की लेकिन सफलता न मिली। मन हार गया। एकांत में नरेन्द्र ने दक्षिणेश्वर जाकर रामकृष्ण देव का आशीर्वाद आर्थिक तंगी हेतु प्राप्त करने का निर्णय लिया। रामकृष्ण देव ने कहा जानता हूं सब तू जरूर आएगा। नरेन्द्र ने जब अपनी आर्थिक समस्या बताई तो रामकृष्ण देव ने कहा सब कुछ मां काली से अंदर जाकर मांग ले। नरेन्द्र मां काली की मूर्ति के सामने गया परन्तु मांगा नहीं गया। दो बार बाहर आया। फिर हिम्मत करके मांग पाया "मां बुद्धि दो। विवेक ज्ञान बैराग्य दो।" नरेन्द्र ने रामकृष्ण देव को जीवन के पथ प्रदर्शक के रूप में ग्रहण किया। पवित्रता और अध्यात्मिकता के परखने से रामकृष्ण अत्यंत मुग्ध हुए और उन्होंने जाना कि यह मनुष्यों को दुख से मुक्त करने के लिए पृथ्वी पर आया है और यही उनके भावों के प्रचार-प्रसार का माध्यम बनेगा।

नरेन्द्रनाथ ने श्री रामकृष्ण का घनिष्ठ संसर्ग लगभग 5 वर्षों तक पाया था। सन् 1885 ई. में श्री रामकृष्ण देव कण्ठरोग (कैंसर) से ग्रस्त हुए।

एक दिन नरेन्द्र ने जब निर्विकल्प के वरदान की प्रार्थना की तो श्री रामकृष्ण देव ने क्षुब्ध होकर कहा, तुम्हे लज्जा नहीं आती? मेरी धारणा तो यह थी कि तुम एक महान वटवृक्ष के समान बढ़ोगे संसार के शोक ताप से हजारों का कल्याण करोगे किन्तु अब मैं देखता हूं कि तुम केवल अपनी ही मुक्ति के इच्छुक हो। किन्तु साथ यह न भूलना होगा कि नरेन्द्रनाथ को वांछित आत्मानुभुति हो चुकी थी। अपनी महासमाधि

के तीन चार दिन पूर्व श्री रामकृष्ण देव ने नरेन्द्रनाथ को अपनी स्वयं की सारी शक्ति दें डाली और उनसे कह दिया मेरी इस शक्ति से, जो तुममे संचारित कर दी है तुम्हारे द्वारा बड़े बड़े कार्य करने होंगे।

सन् 1886 की 16 अगस्त को श्री रामकृष्ण देव ने अपने पार्थिव शरीर का परित्याग कर दिया। नरेन्द्रनाथ का तो मानो सर्वस्य ही चला गया। लेकिन श्री रामकृष्ण देव के ये शब्द नरेन्द्र को हमेशा आंदोलित करते रहते "नर सेवा ही नारायण सेवा"। नरेन्द्र ने मानवता की सेवा का संकल्प ले लिया। अब नरेन्द्रनाथ बन गया था स्वामी विवकानन्द।

अपने देश की सेवा करने के लिए यह आवश्यक था कि संपूर्ण भारत को समीप से देखा जाए। इसलिए स्वामी विवेकानन्द चल दिये देश भ्रमण को। मार्ग में उनकी मुलाकाल शरतचंद से हुई। गाजीपुर में अपने समय के महान योगी पावहारी बाबा से मिले। मुंबई में रेल का सफर करतु हुए स्वामी जी की मुलाकाल श्री बालगंगाधर तिलक से हुई।

स्वामी जी कन्याकुमारी पहुंचे। वहां एक शिला पर समुद्र में तीन दिन तक महासमाधिस्थ बैठे रहे। यहीं पर उन्हें विश्वानुभूति हुई। इसी स्थान पर आज "स्वामी विवेकानन्द मैमोरियल रॉक" विशाल एवं भव्य मन्दिर बना है।

खेतरा महाराज ने स्वामी विवेकानन्द जी के शिकागों जाने की पूरा प्रबंध किया। 31 मई 1893 को स्वामी जी ने मुंबई के कोलंबो के लिए प्रस्थान किया। वहां से जापान होते हुए वे "शिकागो" पहुंचे।

13 सितम्बर 1893 धर्म सभा शिकागों के 'आर्ट पैलेस' में आरम्भ हुई। स्वामी जी ने अपराह्न में अपना भाषण अमेरिका की बहनों तथा भाईयों के सम्बोधन से शुरू किया था कि उपस्थित हजारों श्रोताओं ने करतल ध्वनि से उनका विपुल अभिनन्दन किया। दो मिनट के बाद तालियों की गड़गडाहट थमने पर स्वामी जी ने एक संक्षिप्त भाषण दिया। इसमें सब धर्मों के प्रति उनकी आदरपूर्ण मनोभावना का अपूर्व प्रकाश देखकर श्रोता मुग्ध हो गए। 24 सितम्बर तक धर्म महासभा चली। उनका प्रतिदिन व्याख्यान होता था। उन्हें धर्मसभा का सर्व प्रभावशाली वक्ता माना गया। शिकागो के राजपथों पर उनके चित्र शोभित हुए। सभी समाचार पत्र उनकी हार्दिक प्रशंसा से भर गए। अपनी भाव राशि की चमत्कारिक अभिव्यक्ति एवं आकृति के प्रभाव के कारण धर्म महासभा में वे अत्यन्त जनप्रिय थे। विवेकानन्द जी मंच पर आते तो तालियों की गड़बड़ाहट से उनका अभिवादन होता। सथा की कार्यसूची में विवेकानन्द का वक्तव्य सबसे अंत में रखा जाता था। उनके पंद्रह मिनट का भाषण सुनने के लिए हजारों लाग घंटों बैठे रहते और इंतजार करते।

तदोपरांत वे युरोप गए। पेरिस लंदन में धर्म प्रचार अभियान के बाद अमेरिका लौट। अन्ततः 16 सितम्बर स्वामी जी लंदन से भारत की ओर रवाना हुए। भारत भूमि पर उतरने से पहले स्वामी जी ने मातृभूमि की माटी को माथे से लगाया। पूरा बंदरगाह 'स्वामी विवेकानन्द' की जय के घोष से गूंज रहा था। स्वामी जी का स्वागत रथ पर बिठा कर शोभा यात्रा द्वारा हुआ। स्वामी जी ने देश के विभिन्न नगरों में रामकृष्ण मिशन की अनेक शाखाएं खोली तथा शिक्षा व अध्यात्मिक ज्ञान के 'प्रचार-प्रसार' में कार्यरत रहे। अन्ततः 4 जुलाई 1902 को सांयकाल वे अपने कक्ष में चले गये और वहां एक घंटा ध्यानस्थ रहे। उसके बाद चुपचाप लेट गये दो गहरी सांसे जी और चिर शान्ति में लीन हो गये। मठ समुदाय कलकत्ता और देश विदेश में यह समाचार आग की तरह फैल गया कि समूचे विश्व को प्रेम सदभाव परस्पर सम्मान एवं एकता का संदेश देने वाला युवा सन्यासी 39 वर्ष की आयु में अपने अपने शरीर का परित्याग कर गया।

"निराश्रित"

लेखकः- हेतराम जसपाल
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
अनुभाग- आ0क्षेत्र-नॉन-पी0एस0यू0

कार्तिक मास की एक एक ढलती सांझ शनैः-शनैः... बिखरती हुई कालिमा... प्रकृति की हर-एक दिखाई देने वाली आकृति को अपने स्याह आगोश में समेटने का कार्य प्रारम्भ कर चुकी थी! बस कुछेक बड़ी-बड़ी आकृतियां, जैसे कि ऊंचे मकान, वृक्ष, झाड़ियां इत्यादि धुंधली-धुंधली सी दिखाई दे रही थी। आस-पास के गांव के तकरीबन सभी लोग रोजमर्रा के कार्यों को निपटाकर अपने-अपने घरों में पहुंच कर रात के भोजन की व्यवस्था में जुट चुके थे। दिनभर इधर-उधर फुदकते-विचरते पंछी-पखेरू भी वृक्षों की शाखाओं में इकट्ठे होकर रात के विश्राम के लिए अपनी-अपनी जगह पक्की करने में जुट गए थे। ऐसे में पास ही के धार गांव का एक ढलती उम्र का दुबला-पतला, हाड़-मांस का पुतला मात्र व्यक्ति जिसका नाम नारायण दास है, जिसे गांव के लोग प्यार से चाचा कह कर बुलाते है, दिनभर ठेकेदार के साथ मजदूरी का काम करके घर लौटते हुए खाना बनाने के लिए इस स्याह अंधेरी सांझ की धुंधली पड़ती हुई रोशनी में जंगल किनारे पेड़ों से गिरी सूखी छोटी-छोटी टहनियों को इकट्ठा कर रहा था। वह अस्वस्थ है, पर मजबूर है... उसे यह सब करना ही है। इन लकड़ियों की सूखी टहनियों को एक गट्ठा बनाने के लिए वह अपनी कमर में बांधे परने को खोलकर उसको रस्सी के रूप में नीचे रखता है और लकडियों की टहनियों को एक गट्ठा बनाने तथा उनको अपने कांधे पर उठाने के लिए ज्यों ही वह नीचे झुकता है चीख सी आवाज़ में उसके मुख से हरे राम! हरे राम! शब्द निकल पड़ते है। वह जैसे-तैसे लकड़ी के गट्ठे को अपने कंधे पर उठा लेता है और अपने घर की ओर चल पड़ता है। कुछ ही दूरी पर जा कर रास्ते के किनारे उसे किसी सोये हुए मनुष्य की आकृति सी दिखाई देती है, वह ठिठक कर वहां रूक जाता है और उस आकृति को बड़े ध्यान से देखने लगता है। कुछ क्षण यूं ही देखने पर उसे पक्का यकीन हो जाता है कि यह किसी सोये हुए आदमी की आकृति है। - वह लकड़ी के गट्ठे को एक ऊंची जगह पर रख कर उस को जगाने के लिए उसे हिला कर कहता है - हे भाई! कौन हो तुम यहां इस तरह क्यों लेटे पड़े हो भई! उठो-उठो, इस तरह रात के समय जंगल के किनारे सोना ठीक नहीं है। इस तरह कुछ देर हिलाने पर उस आदमी में हरकत होती है और वह बड़बड़ाते हुए उठ कर बैठ जाता है और आंख मलते हुए कहता है "मुझे मत मारो... मुझे मत मारो"। यह सुन कर चाचा अचंभित सा रह जाता है लेकिन उसे समझने में जरा सी भी देर नहीं लगती कि हो-न-हो इस लड़के को जरूर इसके घर वालो ने किसी बात पर ड़ांटा-फटकारा होगा और यह गुस्से में आकर घर से भाग गया, तभी रूठकर यहां पड़ा हुआ है। वह सोलह-सतरह वर्ष का एक नौजवान लड़का था—चाचा ने उसे बडे प्यार से उठाते हुए कहा -"देखो बेटा! ऐसी अंधेरी और ठंडभरी रात में इस तरह जंगल के किनारे रहना ठीक नहीं है...' यहां जंगली जानवरों का बहुत खतरा रहता है। उठो और अपने घर चले जाओ"।

कौन से घर—किसके घर—नहीं—नहीं मुझे कहीं नही जाना, मेरा कोई घर नहीं है... मुझे यहीं मर जाने दो! लड़के ने रूआंसे स्वर में कहा और अपना चेहरा अपने घुटनों में छुपा लिया।

नहीं, नहीं बेटे ऐसी अशुभ बातें नहीं कहते... चाचा ने बड़े प्यार से लड़के के सिर पर हाथ रखते हुए कहा। प्यार का एहसास महसूस कर लड़के के मन में परिवर्तन होने लगा---और वह रोते-रोते ही कहने लगा -"मगर आप कौन हो चाचा? और मुझसे इतनी हमदर्दी, इतना प्यार, क्यों जता रहे हो"?

अरे चाचा भी कहते हो और पूछते भी हो कि कौन हूं मैं चाचा ने पुचकारते हुए कहा और लड़के की बाजू पकड़ कर उठाते हुए कहने लगा - चलो मेरे साथ ही चलो—मेरा घर पास ही में है घर पर आराम से बातें करेगें! लड़के को चाचा की बातों में हमदर्दी का एहसास महसूस हुआ, उसमें हिम्मत सी उत्पन्न हो गई और वह चाचा के साथ चलने के लिए उठ खड़ा हुआ।

चाचा जैसे ही लकड़ी का गट्ठा उठाने लगा, लड़के ने चाचा से वो लकडी का गट्ठा अपने पास ले लिया और पूछने लगा-"चाचा क्या आप अकेले रहते हो" ? "आपके साथ और कौन-कौन रहते है" ? इससे पहले कि लड़का और आगे कुछ कहता चाचा ने कहा-"नहीं-नहीं बच्चे -मैं अकेला नहीं रहता हूं"।

"तब तुम्हारे साथ कौन रहता है"—लडके ने उत्सुकता भरे स्वर में पूछा।

अरे सब कुछ क्या रास्ते में ही पूछ लेगा... चल-चल पहले घर चल... वहां जा कर सब पता चल जाएगा, हम बातें भी करेंगे और आराम भी।

थोड़ी ही देरे में दोनों चाचा के घर के आंगन में पहुंच गए। चाचा घर के बाहर से ही आवाज लगाते हुए अपनी धर्म-पत्नी जिनका नाम देवकी था, को पुकारते हुए कहता है-देखो तो देवकी मेरे साथ कौन आया है? चाची ने अंदर से ही उत्तर दिया- मैं खाना बना रही हूं आप अंदर आ जाइए। चाचा ने लड़के को अंदर चलने का इशारा किया और दोनो कमरे के अंदर दाखिल हो गए। कमरे में रोशनी के नाम पर एक कोने में छोटे से लकड़ी के स्टूल पर एक लालटेन टिम-टिमा रही थी और साथ ही चूल्हे में जलती लकड़ियो की रोशनी से कमरा और उसकी चार-दीवारी साफ-साफ दिखाई दे रही थी। कमरे के दूसरे कोने में एक चारपाई, उसके पास ही एक पुराना सा लकड़ी का सन्दूक और उस पर रखी कुछ रजाईयां व कम्बल दिखाई दे रहे थे। चाची चूल्हे के पास बैठी मक्की की रोटियों को चूल्हे की आग में सेक रही थी।

लड़के ने कमरे को तिरछी नज़रों से निहारा और चूल्हे में रोटियां सेक रही चाची के पास जा कर पांव छूकर चूल्हे के पास ही बैठ गया - चाची ने आशीर्वाद देते हुए लड़के से बड़े प्यार से पूछा, कौन हो तुम बेटे? कहां के रहने वाले हो? इससे पहले कि चाची अपनी बात पूरी करती चाचा ही बीच में बोल पड़े हां, हां देवकी तुम पूछो इसको... मैंने तो अभी इससे इसके बारे में कुछ भी नहीं पूछा है... बस अकेला जंगल के किनारे पड़ा देख मुझसे रहा नहीं गया और मै इसे अपने साथ घर ले आया। इस पर चाची ने कहा -वो तो ठीक किया आपने, लेकिन हमको यह तो मालूम होना ही चाहिए कि यह लड़का कौन है और ऐसी रात को यह जंगल के किनारे क्यों पड़ा हुआ था? हम पर वैसे ही मुसीबतों के पहाड़ पड़े हुए है कहीं...

इससे पहले कि चाची अपनी बात पूरी कर पाती लड़का ही बीच में बोल पड़ा नहीं नहीं काकी-ऐसी कोई बात नहीं मै आपके ऊपर कोई मुसीबत नहीं आने दूंगा, मै तो खुद ही मुसीबत का मारा हूं। लड़के के मुख से मुसीबत शब्द सुनते ही चाचा ने चूल्हे के पास बैठते हुए कहा-कैसी मुसीबत? ऐसा क्या हुआ तुम्हारे साथ जो तुम्हे घर छोड़ना पड़ा और तुम ऐसे जंगल के किनारे क्यों सो रहे थे? और ऐसी रात में जंगल के रास्ते से कहां जाना चाह रहे थे? जरा अपने बारे में बताओ!

लड़के ने अपनी व्यथा चाचा-चाची को सुनाई चाचा जी मेरा नाम श्यामा है और मैं सेरी गांव का रहने वाला हूँ, मेरी मां चार साल पहले भगवान को प्यारी हो गई और मेरे पिताजी ने दूसरी शादी कर ली! मेरी दूसरी मां मुझसे घर का सारा काम करवाती और भरपेट खाना भी नहीं देती! रोज शाम को जब भी पिता जी काम से घर आते तो उनसे मेरी झूठी शिकायतें किया करती! पिताजी कभी-कभी तो उसकी बातों को टाल दिया करत लेकिन कभी-कभी वो उसकी बातों में आकर मुझको बहुत मारा करते, पिछले एक-दो महीनों से तो वो मुझे ही दोषी समझने लगे थे और हर-रोज मुझे पीटने लगे थे! पिछले ही कल की बात है कि मैंने एक काम को करने से इन्कार क्या कर दिया कि नौबत यहां तक आ गई कि पिताजी ने मुझे बहुत मारा-पीटा और घर से धक्के मारकर निकाल दिया! मैं सुबह से भटकता हुआ यूं ही बदहवास चलता रहा और जब थक गया तो यहां आपके घर के पास जंगल के किनारे आराम करने बैठ गया लेकिन मुझको कब नींद आ गई, मुझे कुछ याद नहीं।

लडके के मुख से जब चाचा -चाची ने उसकी व्यथा सुनी तो उन दोनों की आंखे आंसुओं से नम हो गई! चाची के मुख से उसके बाप के लिए बद्दुआएं निकल पड़ी-कैसा कलयुग आ गया कि एक बाप अपने ही बच्चे को छोटी सी बात पर घर से निकाल देता है! उस पिता के दिल में इतनी भी दया बाकी नहीं थी कि बच्चे को घर से निकालने पर उसे कैसी-कैसी मुसीबतों का सामना करना पड़ सकता है, ऐसे बाप को तो **दोजख**[1] में भी जगह नसीब न हो।

[1]नरक

इस पर चाचा ने भी चाची की बात में हां मिलाते हुए कहा - तुम ठीक कह रही हो देवकी! सचमुच घोर कलयुग आ गया है। लेकिन घबराने की कोई बात नहीं है बेटे... तुम जब तक चाहो हमारे साथ यहां रह सकते हो! चाचा ने लड़के को **ढांढस**[2] देते हुए कहा ।

आपका बहुत-बहुत धन्यवाद! आज आप मुझे न मिलते तो पता नहीं मेरे साथ क्या होता, लेकिन मैं आप के ऊपर बोझ नहीं बनूंगा चाचा, मैं कोई न कोई छोटा -मोटा काम करके अपना गुज़ारा कर ही लूंगा लेकिन घर वापस नहीं जाऊंगा! लड़के ने दृढ़ स्वर में कहा।
तुम हमारे ऊपर बोझ कैसे बन सकते हो बल्कि तुम चाहो तो तुम हमारे भी जीने और अकेलेपन का सहारा बन सकते हो! चाचा ने कहा।
हां बेटे! तुम्हारे सहारे हम भी अपनी बाकी की जिन्दगी आराम से गुजार पाएंगे! चाची ने आतुरता भरी नज़रों से लड़के की ओर देखते हुए कहा।
चाचा-चाची की बातों में अपनापन देख कर श्यामा के मन में उनके प्रति श्रद्धा उत्पन्न होने लगी क्योंकि कोई दुखिया ही किसी दूसरे के दु:ख-दर्द को समझ सकता है! उसने दिल ही दिल में उनके सहारे की लाठी बनने का दृढ़ निश्चय कर लिया।
थोड़ी देर की चुप्पी के बाद चाचा ने कहा, अच्छा देवकी अब खाना भी दो भई, बड़े जोरो की भूख लगी है।
देवकी काकी खाना परोसने लगी! श्यामा पुन: कमरे का निरीक्षण करने लगा! वो कमरे के चारो ओर नज़रे घुमाकर देखने लगा! कमरे के जिस कोने मे चारपाई है उसी के साथ ही दीवार में एक छोटा-सा रोशनदान है जिसको एक छोटे-से मन्दिर का रूप दे कर उसमें शिव-पार्वती की एक तस्वीर रखी हुई है! वहां पर धूप-दीप जलाकर पूजा-अर्चना की जाती है।
देवकी काकी ने तीनों के लिए मक्की की रोटियों के साथ उड़द की दाल परोसी और तीनों चुपचाप खाना खाने लगे! सबने बड़े प्यार से खाना खाया।
खाना खाने के बाद श्यामा ने चाचा-चाची से उनके बारे में जानने के लिए पूछा-चाचा जी अब आप भी तो अपने बारे में कुछ बताओ, तुम्हारे कितने बच्चे है? और वो सब कहां है?
चाचा-चाची दोनों से जब उसने उनकी व्यथा सुनी तो वह भी दंग रह गया। उनके बच्चों ने उनको अपने से अलग करके अकेले जीने के लिए छोड़ दिया था। श्यामा ने आगे पूछा आपसे ऐसी क्या भूल हो गई जो बच्चो ने आपसे मुंह फेर लिया? भूल हमसे ही तो हुई है कि हमने आपकी हर एक ख्वाहिश पूरी की खैर! छोड़ पुराने जख्मों को कुरेदने का क्या फायदा... चाचा ने एक लम्बी सांस लेते हुए बड़े बोझिल स्वर में कहा। कुछ सोचने के बाद चाचा ने आगे कहा कि देख बेटे... अपने हक के लिए लड़ाई और फ़साद करना कुछ हद तक तो ठीक है, मगर मां-बाप जो जीवनभर कमाई करते है, जो संजो कर रखते है कुछ जायदाद, जमीन, घर-आंगन रूपी पूंजी वो किसके लिए? केवल और केवल अपने बच्चों के लिए ही तो करते है, इसलिए हमने भी जो जमा-पूंजी इकट्ठी की थी बस उन्ही के नाम कर दी... जो उनको सौंप दी... हमारा क्या, जब तक अपने बाजुओं में ताकत बाकी हैइंसान कभी भूखा नहीं मर सकता। कहते है कि "जो इंसान किसी के ज़ज्बात, अपनेपन और करीबी रिश्तों की एहमियत को नहीं समझ सके वो पीर पराई क्या समझेगें।
चाचा के मुख से इस तरह की गम्भीर बातें सुनकर अब तो श्यामा ने मन ही मन में यह ठान लिया कि चाहे कुछ भी हो जाए मैं इनके बुढ़ापे का सहारा बनूंगा इन्हे वो सब दूंगा जिनके लिए इनके दिल में अभी भी एक आशा की किरण दबी हुई लगती है।
अगली सुबह जब श्यामा सोकर ऊठा तो देखता है कि चाचा पानी का मटका लाकर रसोई के पास रख रहा है और चाची नाश्ता बनाने में व्यस्त है! आंख मलते हुए श्यामा ने चाची से कहा आपने मुझे क्यों नही जगाया काकी मैं भी कुछ काम कर लेता।
कोई बात नहीं बेटे, अब जब तुम उठ ही गए हो तो जल्दी से नहा-धो लो फिर हम सब नाश्ता करेगें और तेरे काका को काम पर भी तो जाना है।

---

[2]विश्वास

पानी का मटका रखते हुए चाचा ने कहा –अच्छा श्यामा यह तो बता कि तुझे रात को नींद तो अच्छी आई ना कहीं ठण्ड तो नहीं लगी।

हां! हां ! चाचा जी आज तो इतनी बढ़िया नींद आई, देखो तो अब तक तो मैं सो ही रहा था।

अच्छा! चलो अब जाकर नहा लो, पानी गर्म है! चाचा ने कहा ।

श्यामा बाहर आंगन के एक कोने में बने छोटे से स्नानगृह में नहाने चला गया । काकी... नाश्ता तैयार करके चारपाई के साथ ही दीवार में बने छोटे–से रोशनदान में बने मन्दिर में शिव–पार्वती की एक तस्वीर के सामने धूप–दीप जलाकर पूजा–अर्चना करने लगती है।

थोड़ी देर में श्यामा नहा कर आता है तो ` चाची उनको नाश्ता देती है और तीनों नाश्ता करने लगते है! श्यामा मन ही मन किसी सोच–विचार में था, वह सोचने लगा कि मैं अब आगे क्या करूंगा? कहां जाऊंगा? मेरी आगे की जिंदगी अब कैसे गुजरेगी? लेकिन साथ ही उसके मन में यह भी विचार बिचरने लगते कि मैंने तो मन ही मन में चाचा–चाची का सहारा बनने की सोची है, अब यह मेरे मन में क्या अनाप–शनाप सा घूमने लगा नहीं–नहीं... मुझे इनका ही सहारा बनना है, वो मन ही मन अपने आपको दृढ़ करता है ।

श्यामा को इस उधेड़–बुन में पड़ा देख चाची ने उसके मन को जैसे पढ़ लिया और पूछने लगी– क्या बात है बेटे, कुछ देर से देख रही हूं तू कुछ सोच में है... लगता है कि तेरे मन में कुछ–न–कुछ तो अवश्य चल रहा है नाश्ता भी ठीक से नहीं कर रहा है ऐसी क्या बात है हमें भी तो बताओ न।

नहीं–नहीं काकी –ऐसी कोई बात नहीं है–श्यामा ने टालने की असफल कोशिश की।

नहीं–नहीं कुछ तो जरूर है, जो तू किसी गहरी सोच में पड़ा हुआ है! चाची ने उसके मन को और टटोलते हुए कहा।

मैं यह सोच रहा था काकी कि आप लोगों ने एक अनजान को इतना प्यार दिया... इतना अपनापन दिया कि एक ही रात में मानो मुझे मां–बाप दोनों का प्यार एक साथ नसीब हो गया हो। अब मै यह सोच रहा हूं कि आपसे विदाई कैसे लूं।

ऐसे शब्द श्यामा के मुख से निकलते ही चाचा ने नाराजगी भरे लहज़े [3] में कहा।

ठीक है बेटे जैसा तुझे ठीक लगता है वैसा ही कर हमारा क्या, हम तो जैसे–तैसे बाकी की जिंदगी काट ही लेगें! चाची ने चाचा की बात को आगे जारी रखते हुए कहा।

बेटे हमने तीन–तीन बच्चों की परवरिश की है उन्हे किसी चीज की कमी महसूस नहीं होने दी! आज हमें फिर भगवान ने एक मौका दिया है कि हम ...

इससे पहले कि चाची अपनी बात पूरी कर पाती चाचा ने बात काटते हुए कहा–देखो बेटे, यूं दर–दर की ठोकरे खाने से तो अच्छा होगा कि तू कुछ दिन हमारे पास रूक लें! जब तुझको कहीं कोई काम–वाम मिल जाए और तुझे लगने लगे कि तू अपना गुजर–बसर खुद कर लेगा तब कहीं अलग से अपना **रैन–बसेरा**[4] भी कर लेना और हां, रही बात काम की तो आज तू मेरे साथ मेरे काम पर चलना मैं ठेकेदार से बात करूंगा, यदि उनके यहां किसी की जरूरत हुई तो वो मेरी बात को टालेगे नहीं और कोई न कोई इन्तजाम जरूर हो जाएगा।

यह तो बहुत बढ़िया होगा चाचा... मैं जरूर आपके साथ चलूंगा।

दोनो तैयार होकर काम के लिए निकल पड़ते है। चलते–चलते श्यामा चाचा से पूछता है–चाचा एक बात कहूं?

हां–हां जरूर कहो बेटा ।

मैं कल रात से ही सोच रहा हूं कि मेरे मां–बाप ने तो मुझे घर से निकाल बाहर किया! अगर मुझको आप न मिले होते तो मेरा क्या होता! यदि मैं वहीं जंगल किनारे सोया पड़ा रहता तो रात को तो क्या जाने जंगली जानवरो ने मुझको खा लिया होता।

---

[3] अंदाज़

[4] ठहरने का प्रबन्ध

"नहीं–नहीं बेटे –ऐसा कुछ नही होता" "भगवान यदि एक रास्ता बन्द करता है तो वो दूसरा भी अवश्य ही सूझा देता है"। "उसके घर में देर है अंधेर नहीं" क्योंकि वो सबके साथ है, और उसकी निगाहें हरेक पर रहती है।
इस तरह बातें करते–करते वह दोनों ठेकेदार के यहां काम पर पहुंच जाते है।

ठेकेदार दूसरे काम करने वालों से पूछ रहा होता है–क्यों भई हरि मामा आज नारायण चाचा कहीं दिखाई नहीं दे रहेंक्या अभी तक वो पहुंचे नहीं काम पर?
अभी कहां साहेब! धीरे–धीरे चलता हुआ अभी तो चाचा कहीं रास्ते में ही होगा! हरि मामा जबाब देता है।
आजकल हर दिन ही वह देर करने लग गया हैऐसी क्या बात हैं आप में से किसी को कुछ मालूम है ठेकेदार फिर पूछता है।
नहीं साहेब –हमसे तो ऐसा–वैसा कुछ नहीं बताया चाचा ने ।
"पर एक बात कहे साहेब आपसे" हरि मामा के पास खड़ा हुआ बिहारी ठेकेदार के पास जा कर कहता है।
हां––हां––कहो –क्या कहना है तुमको।
मैं क्या कहता हूं साहेब के क्यों न आप नारायण चाचा को साफ–साफ कह दे कि अब वो कामगर का यह काम छोड़ क्यों नहीं देता—अब उससे यह काम ठीक से होता भी तो नहीं है।
बिहारी बाबू –चाचा जैसा तजुर्बा और काम मे सफाई और पक्काई किसी के पास नही है कहीं जरा सा भी खोट निकाल के बता दे कोई चाचा के काम में ठेकेदार पूरे आत्म–विश्वास से बताता है।
वो तो सब ठीक है लेकिन जहां पांच दिन का काम होता है चाचा उसी काम को करने मे सात–आठ दिन लगा देता है इससे आप का ही नुकसान है साहेब। बिहारी उकसाने के अंदाज़ में कहता है।
पर बिहारी, आजकल कोई तजुर्बेकार राज–मिस्त्री मिलना भी तो आसान नहीं गर मिल भी जाए तो एक तो वह दिहाड़ी ज्यादा चाहेगा और काम भले ही वो चाचा से ज्यादा करे लेकिन चाचा जैसी सफाई कोई नहीं दे सकता।
ठेकेदार साहेब मेरा एक भतीजा है, उसने शहर में जाकर बडे–बडे ठेकेदारों के साथ मिस्त्री का काम सीखा है अब वो एक सुलझा हुआ कामगार बन गया है! आप चाहे तो वो दिहाड़ी भी चाचा जितनी ही लेगा और काम भी चाचा से डबल करेगा! बिहारी ने ठेकेदार को प्रलोभन देते हुए कहा।

इससे पहले कि ठेकेदार आगे कुछ कहता नारायण चाचा लड़के के साथ काम पर पहुंच जाता है।
राम—राम ठेकेदार जी।
राम—राम चाचा क्या बात है चाचा आजकल आप देरी से आने लगे हो ठेकेदार चाचा से पूछता है।

क्या कहे रहे हो साहेब कभी–कभी दो–चार मिनट ऊपर नीचे हो जाते है! चाचा ने जबाव दिया।
दो–चार मिनट? आज तुम पूरे पन्द्रह मिनट लेट हो चाचा –ठेकेदार घड़ी की ओर देखते हुए कहता है।

एक बात कहूं साहेब, सुबह की देरी तो दिख जाती है आपको लेकिन जो हर शाम को कभी बीस मिनट, कभी आधा घण्टा ज्यादा काम करके जाता हूं उसका ध्यान नहीं क्या आपको! चाचा ने हंसते हुए कहा।
साथ ही खड़े हरि मामा ने भी चाचा की बात का समर्थन करते हुए ठेकेदार के करीब आ कर कहा– नारायण चाचा ठीक कह रहा है जनाब! मैं भी हर रोज चाचा के साथ ही निकलता हूं।

ठेकेदार निरूत्तर हो गया उससे चाचा की बात का कोई जबाव देते नहीं बन सका और टाल–मटोल करते हुए कहने लगानहीं–नहीं मैं तो ऐसे ही पूछ रहा था! अच्छा यह बताओ आज यह आप अपने साथ किस को लाए हो?
यह श्यामा है साहेब! श्यामा ठेकेदार को नमस्ते करो! चाचा श्यामा को आगे करते हुए कहता है।
श्यामा ठेकेदार को नमस्ते करता है—नमस्ते साहब।
नमस्ते –नमस्ते।

चाचा ठेकेदार से अर्ज [5] के अंदाज मे कहता है यह लड़का काम की तलाश में है साहेब—कल रात से यह मेरे साथ है ठेकेदार बाबू यदि आप इसको भी काम पर रख लेते तो आपकी बड़ी मेहरबानी होगी बेचारा बड़ी मुसीबत का मारा है-साहेब।

नारायण चाचा तुम तो जानते हो कि मेरे यहां काम पर आदमी पूरे ही है—इसे कैसे लगा दूं-ठेकेदार चाचा की ओर देखते हुए कहता है।

साहेब ! जहां वो दो लड़कियां काम कर रही है, उनके मुकाबले तो साहेब यह लड़का सौ-दर्जे अच्छा काम करेगा—यह मैं तसल्ली के साथ कह रहा हूं।

एक अन्य आदमी जिसका नाम छज्जू है आगे आते हुए कहता है "ठेकेदार साहब नारायण चाचा ठीक कह रहे है, इनकी बात रख लो -इस लड़के को भी काम पर रख लो कुछ ही दिनों बाद तो वैसे भी आपको और कामगारों की जरूरत पड़ने वाली है।"

शुक्रिया छज्जू, तुमने यह अच्छी याद दिलाई—छज्जू।

परन्तु यह लड़का अभी नाबालिग दिखता है! कहीं चाइल्ड़ लेबर यानि बाल मजदूरी का मामला न बन जाए! नारायण चाचा क्या उम्र होगी इस लड़के की ? ठेकेदार पूछता है।

इससे पहले कि नारायण चाचा जबाव देता लड़का बोल पड़ता है-मेरी उम्र सत्रह साल सात महीने 12 दिन है साहब।

वाह! क्या बात है ठेकेदार ने हैरानगी से श्यामा की ओर देखते हुए कहा।

देखो ठेकेदार साहेब- मुझे आपके साथ काम करते हुए कई साल हो गए -मैने कभी आपसे कोई सिफारिश नहीं की बस अच्छे और बुरे से आपको सतर्क करवाता आया हूं! मैं भला किसी ऐसे-वैसे को क्यों काम पर रखने की वकालत करने लगा लड़का शरीफ़ है और इस समय मुसीबत का मारा हुआ है—ऐसे जरूरतमंद की सहायता करना पुण्य का काम होगा साहेब।

ठीक है चाचा मैं आपकी बात को टाल नहीं सकता पर कल को कोई ऊंच-नीच हो गई तो इसका मैं जिम्मेवार नहीं होऊंगा—इसका विशेष ध्यान रखना- ठेकेदार ने कहा।

आपका बहुत-बहुत धन्यवाद साहेब—यह जिम्मेदारी मेरी रही ऐसी -वैसी कोई बात नहीं होगी! चाचा ने खुश हो कर ठेकेदार का धन्यवाद करने हुए कहा।

नारायण चाचा लड़के को अपने साथ काम पर ले जाता है और लड़के को काम के बारे में बताता है। श्यामा चाचा से मिस्त्री के काम को ही नहीं पक्के मकान को तरकीब से बनाने का काम भी बड़े ही ध्यानपूर्वक सीखने लगा और चाचा के बताए गए तजुर्बे को जल्दी ही आत्मसात करने लगा और चाचा से घर पर भी काम की बारीकियों के बारे में पूछता रहता और चाचा के बताए हुए तजूर्बे[6] के अनुसार अच्छा काम करने में पारंगत[7] हो जाता है। काम पर भी उसके अच्छे व्यवहार से सभी लोग खुश रहते और ठेकेदार का तो वह कुछ ही दिनों में चहेता बन जाता है और एक वर्ष में ही श्यामा काम पर अपनी अच्छी पकड़ बना लेता है। वो भी चाचा की तरह ठेकेदार को सलाह मशविरा देने के काबिल बन जाता है। ठेकेदार भी उससे हर मामले में सलाह-मशविरा करता है, नफा-नुकसान का भी आकलन करता है। ठेकेदार को भी ठेकेदारी के काम में पहले की अपेक्षा काफी फायदा होने लगता है। घर में काका-काकी भी उसके व्यवहार से और उसका सहारा पाकर बहुत खुश होते है।

एक दिन काम से छुट्टी करने के बाद चाचा के साथ श्यामा घर लौट रहा होता है—तो रास्ते में वो चाचा से पूछता है काम करते हुए दो साल कैसे बीत गया पता भी न चला काम में इतने मशगूल हो गए थे कि मानो कल की ही बात हो।

हां श्यामा—ठीक कहा तुमने, वक्त तो पंख लगा कर यूं ही बीत जाता है... बस मनुष्य को इसके साथ-साथ चलना सीख लेना चाहिए! तभी वो समाज में कुछ कर सकता है और इस दुनियां की भागम-भाग के साथ चल पाता है! चाचा ने कहा।

---

[5]प्रार्थना

[6]अनुभव

[7]निपुण

सही कहा आपने चाचा... कुछ देर सोचने के बाद श्यामा चाचा से कहता है चाचा मैं सोच रहा था कि अब हमको भी एक अच्छा सा मकान बना लेना चाहिए! ज्यादा नहीं बस दो-एक कमरे और रसोई-बाथरूम! इन दो वर्षो में हमारी कुछ न कुछ तो बचत हो रखी है, कमी पड़ी तो कुछ थोड़ा बहुत इधर-उधर से भी कर लेगें।
ठीक है श्यामा ! जैसा तुझे ठीक लगता है... चलो घर मे जाकर तेरी चाची से भी पूछ लेते है।
घर मे आकर चाची से भी मकान बनाने के बारे में बात करता है! चाची श्यामा की बात सुनकर बहुत ही खुश होती है !कहती है, भगवान तेरा लाख-लाख धन्यवाद आज तुमने हम जैसे बेसहारा बुढ्ढों को भी जीने का सहारा दे दिया! हमारे अच्छे-बुरे के बारे में भी कोई सोचने वाला और हमारे साथ खड़ा होने वाला हो गया... श्यामा तू हमेशा सुखी रह मेरे बच्चे... चाची श्यामा को दिल से दुआएं देते हुए आगे कहती है, हम तो बस जैसे-तैसे जिंदगी को ढो रहे थे! लेकिन तुमने इसमें एक नई जान फूंक दी बच्चे।

नहीं-नहीं काकी... ऐसा तो मैंने कुछ भी नहीं किया बल्कि उल्टा आप लोगो के कारण मुझ जैसे निराश्रित को एक नई जिंदगी नसीब हुई है! आपने एक अनाथ को आसरा दे कर जीना सीखा दिया।

बगल में बैठे चाचा ने बात को आगे बढ़ाते हुए कहा - भगवान के करम को समझना मनुष्य के बस की बात नहीं है! एक झीने से परदे के पीछे से वह सब खेल देखता है—कौन क्या कर रहा है, उसको सब ख़बर है—श्यामा। 'मनुष्य तो युग-युग से अपने जीवन को सुखमय, उपयोगी, शान्तिपूर्ण एवं आनन्दपूर्ण बनाने के लिए जी-तोड़ प्रयास करता आया हैं और इस प्रयास का आधार हमारी संस्कृति एवं परवरिश है जो प्रत्येक इन्सान को विरासत में नही बल्कि कड़ी तपस्या से मिलती हैं और इस तपस्या के फलस्वरूप ही वह अपना विकास करता आया हैं।' श्यामा चाचा के साथ मिलकर कुछ ही महीनो में बिज़ली-पानी, साज-सज्जा, हरेक सुख-सुविधा का ध्यान रखकर एक अच्छा सा मकान बनाकर तैयार कर लेता है। ठेकेदार भी श्यामा की मदद करता है और श्यामा के व्यवहार और उसकी लगन-ईमानदारी, लगनता और जिन्दगी को सच्चाई के साथ जीने की जिजीविषा को देखते हुए ठेकेदार अपनी बेटी शालिनी का ब्याह श्यामा से करवा देता है। श्यामा अब चाचा को बाहर मज़दूरी का काम करने से रोक देता है और घर की पूरी जिमेदारी अपने ऊपर ले लेता है । चाचा-चाची, अब श्यामा और बहू शालिनी के सहारे एक खुशहाल जिन्दगी जी रहें है। किसी ने ठीक ही कहा है जिसका कोई नहीं उसका तो ख़ुदा है यारों अर्थात ऊपर वाला सच्चे निराश्रितों का भी ख्याल रखता है उनको किसी न किसी का सहारा और कहीं न कहीं आश्रय अवश्य मिल जाया करता है।

ऑनलाइन स्कूल

सिद्धांत खानचंदानी
पुत्र -समता खानचंदानी

मेरे6th स्टैण्डर्ड के एग्जाम अच्छे जा रहे थे! पेपर्स के बाद क्रॉस-चेक करने पर लग रहा था पूरे में से पूरे नंबर आ सकते है! हां, साइंस में एक आसान सा प्रश्न जो दो नंबर का था वो गलत हो गया था, पर पापा उस पर भी खुश हुए थे, 'चलो मेरे बेटे ने कोई तो प्रश्न गलत किया!' पापा ऐसे ही है- 'मिस्टर कूल', हाँ मम्मा ज़रूर छोटी-छोटी बातों में परेशान हो जाती हैं, मगर उनको परेशान करना मेरा और पापा का फेवोरेट काम हैं! अब मेरे सिर्फ दो पेपर बचे थे- हिन्दी और संस्कृत। मुझे फर्स्ट आने की पक्की उम्मीद थी! हमारे शहर में एग्जाम के बाद गर्मियों की छुट्टियाँ लग जाती हैं और गर्मियां मुझे दो कारणों से बहुत पसंद है, पहला- नानी के घर जाने को मिलता है, दूसरा - गर्मियों में मम्मा स्विमिंग क्लब भेजती है और मुझे स्विमिंग बहुत -बहुत पसंद है! मगर क्यूंकि हम शिमला में है, न नानी है, न गर्मियां, न स्विमिंग! यहाँ एग्जाम के तुरंत बाद अगला सेशन शुरू हो जाता है! पर मुझे स्कूल जाना भी पसंद है, घर पर तो बोर ही हो जाता हूँ! मेरी संस्कृत की तैयारी पक्की थी!

एक दिन सुबह पापा के फोन पर स्कूल से मेसेज आया कि एग्जाम केंसल हो गए हैं! कोरोना के कारण! मुझे बड़ा गुस्सा आया, इतनी तैयारी की थी! फिर पापा ने समझाया कि ये ज़रूरी था! कोरोना के बारे में बातें तो सुन ही रहा था, उस समय पापा ने अच्छे से समझाया कि यह ऐसी बीमारी है जिसका कोई ईलाज नहीं है और यह बहुत तेजी से फ़ैल रही है! इसलिए सबको घर में बंद रहना होगा! मगर अच्छी बात यह हुई कि मम्मा-पापा भी घर पर ही थे ! हम प्ले- स्टेशन पर विडिओ गेम खेलते और मज़ेदार डिशे खाते! मेरी ड्रम्स क्लासेस बंद थी और मेरे ड्रम्स टीचर हितेश सर, जो शिमला में मेरे अकेले दोस्त थे मैं उनसे नहीं मिल पा रहा था ये बात मुझे अच्छी नहीं लग रही थी! मगर धीरे -धीरे समय कट गया! फिर एक दिन मेसेज मिला कि स्कूल मोबाइल पर लगेंगे! पहले तो मैं बड़ा खुश हुआ मगर ये क्लासेस बहुत लम्बी चलती थी और होमवर्क इतना ज्यादा मिलता कि मैं वह करता ही रह जाता।मेरे लगातार फ़ोन पर रहने से मम्मा-पापा बिलकुल खुश नहीं थे।कई बार शनिवार-रविवार को भी क्लासेस लग जाती और मुझे बिलकुल छुट्टी नहीं मिलती| नाराज़ हो कर एक दिन पापा ने प्रिंसिपल सर से शिकायत कर दि! उस दिन मुझे स्कूल से बहुत सरे फोन आये, प्रिंसिपल सर, वाईस-प्रिंसिपल मैडम और दूसरे क्लास-टीचर्स ने भी बात की।आख़िरकार रविवार के दिन स्कूल लगाना बंद हुआ! वैसे तो मुझे स्कूल की याद आती है... और दोस्तों की भी, मगर ऑनलाइन क्लासेस की आदत पड़ गई है| बस कोरोना के ख़तम होने का इंतजार कर रहा हूँ...बहुत दिनों से डोमिनोज का पित्ज़ा नहीं खाया है ना|

खण्ड 'ख'

कविताएं

सुनो बंधु! कोरोना को भगाना है...

वंदना राणा
पत्नी जगदीश राणा
स.ले.प.अ.

सुनो बंधु !
लड़ना है कोरोना से
न कि डरना है
तुम्हें...
बस इतना ही करना है...
मास्क लगाकर चेहरे पर
हाथ धोकर साबुन से बार-बार
'वार'
इस पर करना है...

न शस्त्र से न अस्त्र से
न मैदान में, न पहाड़ में
न भीड़ में न बाजार में
अज्ञात शत्रु को
घर में रहकर हराना है
कोरोना को भगाना है...

दो गज की दूरी बनाकर
पाठ स्वच्छता का पढ़कर
संग कुदरत से मिलकर
रिश्ता खुद से रखकर
दीप सभ्यता संस्कृति के जलाकर
देहरी को अपनी सजाना है...
सुनो बंधु... कोरोना को भगाना है..

बचाव में ही बचाव है सुनो
हमसे ही रोशन घर हमारा, परिवार है...
देश समाज, हमारा कल और आज है...
इसलिए हमें संभलना है, साथ औरों को भी बचाना है...
जीवन का पल-पल अनमोल हर पल आनंद संयम से बिताना है...
सुनो बंधु! कोरोना को भगाना है।

मजदूर या मजबूर

नाम: बिमल भारती
पद: लेखापरीक्षक
सा.क्षै.(वि.प्र.क.)

यूं तो निकले थे घर से कमाने को ऐ करोना, ना जानते थे तू ऐसी निर्दयता दिखायेगा
जो सोचते थे कभी गाँव से बाजार जाने को गाड़ी मिल जाये, तू उन्हें पैदल मीलों दौड़ायेगा
घाव लिए मजदूर चलेंगे, हम तुम कितने दूर चलेंगे
पैर से छाले पूछ रहे, कब तक हम मजबूर चलेंगें
जीवन की मिट्टी के अनमोल परिदें, खुद भूखे सो गए
बनाकर दुनिया का आशियाना, खुद सड़क पर सो गए
पेट की आग बुझाने को, वो दूसरे शहर में जाता है
वह मजदूर है साहब दिन भर मजदूरी करता है, तब शाम को खाना खाता है
देखकर उस गरीब के हाथ के छाले, शाम होने से पहले सूरज डूब गया
वक्त का मारा था साहब, अपने पेट की खातिर डूब गया
बेरोजगारी और गरीबी पहले ही महामारी थी
क्या इतना दु:ख काफी नहीं था, अब करोना की ही बारी थी
भूख क्या प्यास क्या मेरी कीमत का कयास क्या, निकल पड़ा मैं तो
अपने आशियाना को, मजबूर था मैं तो दाने-दाने को
एक तरफ महामारी है, एक तरफ है रोटी
दोनों तरफ ही मौत खड़ी है, कौन बड़ी कौन छोटी
परेशानियां बढ़ जाएं तो इंसान मजबूर होता है ।
श्रम करने वाला हर व्यक्ति मजदूर होता है ।

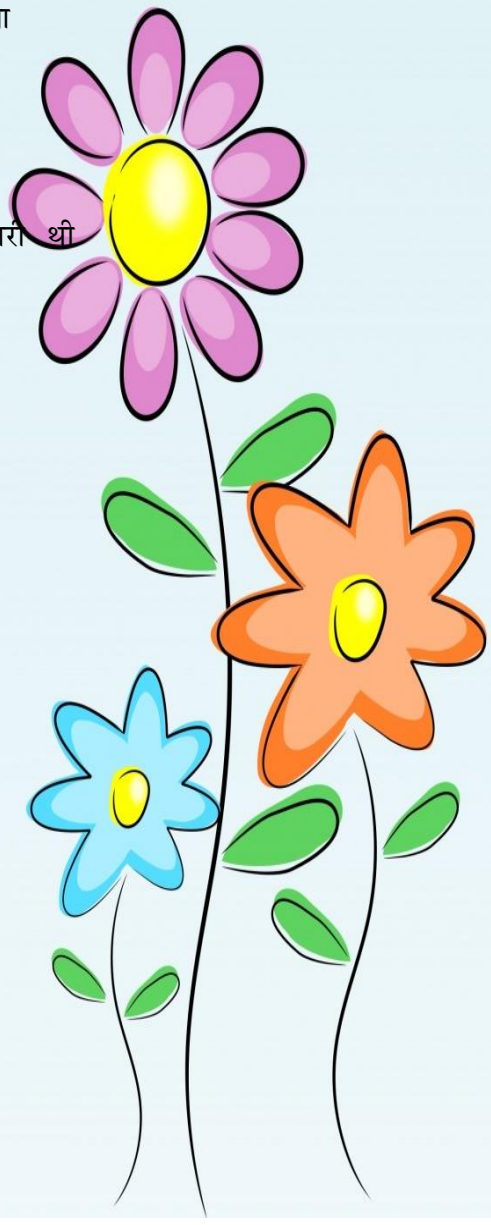

कशमकश

विजयलक्ष्मी
सहायक लेखा अधिकारी
निधि–12

कहां खो गई
बचपन की मासूमियत
क्यूं इतने समझदार
हो गए हम ?
क्यूं दोहरा जीवन जी रहे है?
सच का सामना करने से
क्यूं कतराते है सब?
भीतर का खोखलापन
बाहरी आडम्बरों से
ढक दिया गया है ।
परन्तु, कभी सोचा है क्या
जब भीतर में इतनी रिक्तता है
तो बाहर का आडम्बर
बाहरी कोलाहल
कुछ मायने रखता है क्या?
शायद नहीं
बहुत जरूरी है
भीतर की सहजता
भीतर का आनन्द
शायद जीने का सलीका
भूल गए है हम
छोटी–छोटी खुशियों में
जो ज़िन्दगी बसती थी
वे बड़े–बड़े सपनों को
पूरा करते–करते
कब अन्तिम पड़ाव पर
पहुँच जाती है
पता ही नहीं चलता
यही बेहतर है
ज़िन्दगी का हर लम्हा
अपनों के साथ गुजारा जाए
हर लम्हा, यादगार लम्हा
सुनहरे पलों की मधुर स्मृतियां
जिन्दगी को रखती है
तरोताजा हर पल हर दम
ज़िन्दगी को खोखला नहीं,
सम्पूर्ण बनाना हो मकसद
ज़िन्दगी जीना है, गुजारना नहीं
गुजर तो यूं भी जाएगी!

".....मेरे शहर में"

शैलेश सोनी
वरिष्ठ लेखाकार (बुक-II)
कार्या.प्रधानमहालेखाकार
(ले. व ह.)

जहाँ गालियों में भी प्यार है
जिसकी गलियों में बसता
अपनी अलग संसार है,
यहां गंगा-जमुनी तहजीब है
इसकी फितरत बड़ी ही अजीब है
धूप भी है, छांव भी है
कभी-कभी बेमौसम बरसात है
हर पहर में,
कुछ अलग सी बात है
मेरे शहर में .....।
अंग्रेजों से लोहा इसने भी लिया
जब-जब जरूरत पड़ी
अपना खून इसने भी दिया,
कई वीर सपूत, कई हस्तियां भी
पैदा किए इसने,
चंद पन्नों की कहानियां नहीं
पूरा इतिहास संजोया है
अपने सीने में,
आजादी की निशानियां आज भी है
मेरे शहर में,
कुछ अलग सी बात है,
मेरे शहर में....।
भक्ति है श्रावण मास में
तो अलग सा कुछ माह-ए-रमजान है
न जाति न धर्म में बंटा कभी
खुद मे गीता, खुद में कुरान है
संगम की हवा भी यहां कुछ खास है
जहां रंगों की बरसात और
सेवईयों की मिठास है,
त्योहार नही जलसा होता है
मेरे शहर में,
कुछ अलग सी बात है,
मेरे शहर में....।
झुकना इसे आता नहीं
डरना इसकी आदत नहीं
ये जगह वही है जहां
"आजाद" की शहादत हुई,
हर गली, हर नुक्कड़
हर चौराहे पर
लोग दिल खोल के मिलते है,
कोई बारूद क्या डराएगा इसे
तमंचे और बम से तो
यहां के बच्चे खेलते है,
सुर्खियों में बना रहता है
हर खबर में,
थोड़ी अकड़ तो थोड़ी नजाकत
भी है मेरे शहर में
कुछ अलग सी बात है
मेरे शहर में,
कभी देखना हो मिजाज
मेरे शहर का,
तो तुम भी कभी आना
मेरे शहर में....

शिमला की ऐतिहासिक धरोहर - गॉर्टन कैसल

वंदना राणा
पत्नी जगदीश राणा
स.ले.प.अ.

धरोहरें
कब रहती हैं बची हुई
अपने आप...,
बचानी पड़ती है
धूल-धुए, आंधी, तूंफा
और.... आग से...,
वो भी नहीं बच पाया था
गॉर्टन कैसल
वास्तुकला का अद्भुत नमूना जो
देखते ही बनता था...,
कभी किसी जमाने में आन बान
शिमला की हुआ करता था...,
आज भी कृतियां-स्मृतियां शेष हैं उसकी
बची-बचाई सी
आने वाली नस्लों के लिए...,
सोचती हूं
इतिहास के वरकों को
खंगालते-बदलते रहना चाहिए
सिर्फ यही धरोहरें हैं जो
इतिहास को जिंदा रखे हुए हैं
भावी पीढ़ी के लिए...,
आग से बचाकर उसके अवशेषों को
यूं ही
बचती-बचाई जानी चाहिए
धरोहरें, नस्लें-फसलें
इमारतें-विरासतें... स्मृतियां-संस्कृतियां,
सभ्यताएं-भाषायें...आस्थायें-मान्यतायें
बदलते वक्त के
साथ भी...,
खड़ा है अपनी पहचान लिए
आजकल
जिसमें महालेखाकार का दफ्तर है
जोबाबुओं का मान है
हिमाचल प्रदेश की शान है
शिमला की एतिहासिक धरोहर यह
गॉर्टन कैसल...।

सोच रहे है..

सुनील कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कल्याण अनुभाग

सोच रहे है आज सभी ये,

हो कैसे अब दो के चार..।

आंगन बीच खड़ी बेशरमी, सिसक रही है कोने लाज

सिंहासन है चाहत सबकी, सबका सपना है बस ताज

बूढ़े योद्धा रण में उतरे, हाथ काठ की ले तलवार

सोच रहे है...

जिनके हाथों हुआ अनादर, हुए वो अपने खास कहां ?

मांग रही है जर्जर कश्ती, हर पल एक नई पतवार।

सोच रहे है..

मुखर लोग भी मौन हुए अब, सूनी सी लागे चौपाल

मिजाज देख शमशीर का, सहमी सी लगती है ढाल

यही चिन्ता है नाखुदा को, होगा कैसे बेड़ा पार

सोच रहे है...

नपुंसकों की भरी सभा में, पंखों की बजती करताल

निष्कासित जो हुए सभा से, ऊंचा करके चलते भाल।

बाहर से है हा... हा... ही... ही..., अन्दर सबके हाहाकार

सोच रहे है...।

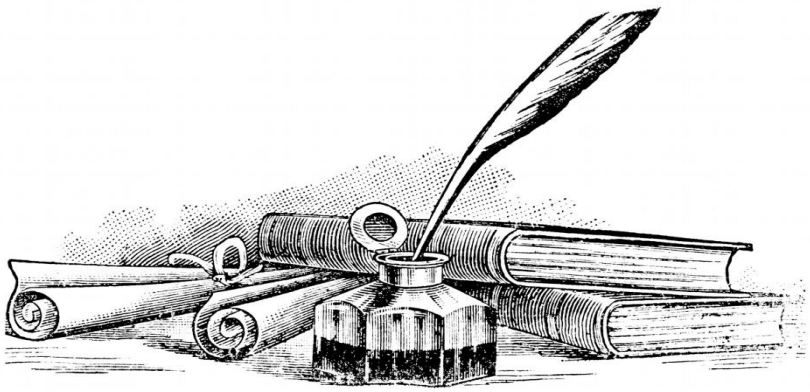

मेरा कोई भी दोस्त बूढ़ा नहीं हुआ .....!

देवेन्दर कुमार शुक्ला
वरिष्ठ लेखाकार

सच्चाई में ढले हैं,
सब अब भी मनचले हैं।
कृपा है सब पे रब की,
पर्वत से सब खड़े है।

ना दर्द कोई दिल में,
छा जाऐं वो महफिल में।
ओ सबके काम आये,
जो भी हो मुश्किल में।

नहीं कोई है घमंडी
ना ही पैसे का गुरूर।
यारों के काम आयें,
बस ये ही इक सुरूर।

इक दूसरे पे जान ये
छिड़कते है सब के सब।
मिलते ही ये कहेंगें,
अबे अब मिलेगा कब।

कोई पी रहा है दारू,
कोई बन गया है साधू।
मस्ती में जी रहें है,
नहीं कोई भी बेकाबू।
बालों में डाई सबके,
कॉलर पे टाई सबके।
लाली ये दोस्ती की,
चेहरे पे छाई सबके।

कभी फ्रेन्ड की बातें,
कभी उससे मुलाकाते।
करते नहीं थकते हैं,
कट जाती कई रातें।

बच्चे हैं बराबर के,
पर सब ही सयाने हैं।
हेमा से करीना तक,
ये सबके दीवाने है।

हे प्रभु, मेरे दाता तू,
इन सबको स्वस्थ रखना।
जितने थे कभी पहले,
इन्हें और मस्त रखना।

मेरा कोई भी दोस्त
बूढ़ा नहीं हुआ।

भारत

लेखक:-दया सागर
वरिष्ठ लेखा परीक्षक

पहले भारत था, ये भारत क्या
पहले महल थे, ये इमारत क्या
जो पहले था, वो अब नहीं है
जो अब है, वो पहले नहीं था । 1

अंग्रेज आए करने व्यापार
भारतीयों ने उनसे भी प्यार किया
अँगुली पकड़कर पकड़ी कलाई
और भारत पर अधिकार किया ।3

फूट डालो और राज करों की
नीति ये अपनाई थी
जात पात और धर्म आरक्षण की
खोदी गहरी खाईं थी । 5

भारत सोने की चिड़ियाँ थी
सारा सोना साफ किया
कुछ गद्दरो को लालच देकर
देश टुकड़ों में बाँट दिया ।7

आजाद तो हो गए हम
पर फिर भी कुछ दुश्वारी है
जात-पात और धर्म आरक्षण में
बँट गई जनता सारी है । 9

अगर बढ़ना है आगे
और भारत महान बनाना है
भेदभाव से ऊपर उठकर
सबको अधिकार दिलाना है ।11

चमकेगा फिर से भारत
कहलायेगा सोने की चिड़िया
भारत ही विश्व गुरु है
फिर से मानेगी दुनिया । 13

तुर्क, मंगोल और मुगल लुटेरे
सबने भारत को लूटा
कितने अत्याचार किये
पर भारत कभी नहीं टूटा । 2

भारतीयों को गुलाम बनाने को
भारतीय व्यवस्था पर प्रहार किया
जिसने भी आवाज उठाई
उन वीरों को मार दिया । 4

पहले बहती दूध की नदियां थी
सब अंग्रेजों ने बर्बाद किया
चाय कॉफी के बागान लगाए
मदिरा का प्रचार किया । 6

उन शहीदों को भूल गये तुम
जिन्होंने अपना बलिदान दिया
अंग्रेजों से लोहा लेकर
भारत को आजाद किया ।8

कुछ चीन के दलाल बने है
कुछ है पाकिस्तान के
दुश्मनों का ये साथ देते है
पर खाते हिंदुस्तान से ।10

एक बनों और नेक बनों
यही नारा अपनाना होगा
हिंदू मुस्लिम सिक्ख इसाई
सबको एक हो जाना होगा ।12

पहले भारत था, ये भारत क्या
पहले महल थे, ये इमारत क्या
जो पहले था, वो अब नहीं है
जो अब है, वो पहले नहीं था । 14

मुस्कुराते रहिये... !

बलराम
व. लेखापरीक्षक

जिन्दगी सख्त सही
मुस्कराते रहिए
एक-दूजे से
बतियाते रहिए
सफर मंजिल का है
और रास्तों की भीड़ है
चलते चलते ठहरिए
थोड़ा सोचा करिए
इन रास्तों का
कोई ठिकाना तो है नहीं
खुशियों के बन्दोबस्त में
कुछ शौक भी जिन्दा रखिए
यूं न रफ्तार हो
कि दोस्त पुराने छूटे
अपने सामान में
सब नाम-पते साथ रखिए
किसी के पैर खींच के
न आप आगे बढ़े
जुबान मीठी
दिल में खुदा का खौफ रखिए
बहुत कुछ कह लिया हमने
बहुत कुछ सुन लिया तुमने
जो एक-टुक देखे जाते हो
अपनी नजरों पे कुछ
नजर रखिए।

हम औरतें

निर्मला देवी
लिपिक

अपनी तमाम मसरूफियतों..परेशानियों..
और पशेमानियों के बावजूद,
हमने सोचा है.. कि
मुस्कुराया जाए...
क्यूंकि दुनिया को क्या पड़ी है,
हमारी तकलीफों से..
कि कैसे हमने उलझी ...
बिखरी... दुनिया संवारी है,
बेरंग कमरों में
इन्द्रधनुष सजाये है..
उदास आँखों में..
हंसी के समन्दर खींच बुलाये है,
और अपने इन्ही दो हाथों से..
पूरी दुनिया संभाली है,
तो जब इन तमाम
सहूलियतों के बदले...
कोई न दे दाद..
और कोई न बोले शाबाश ...
तो हमने सोचा है,
की दे कर खुद का साथ...
मुस्कुराया जाये !!

प्रधान महालेखाकार महोदया द्वारा खिलाडियों को पुरस्कार वितरण

स्वतंत्रता दिवस समारोह की कुछ झलकियां

ध्वजारोहण 15 अगस्त 2020

हिन्दी पखवाड़ा 2020

वर्ष 2019-20 में सेवानिवृत्त हुए अधिकारी/कर्मचारी (लेखापरीक्षा कार्यालय)			
क्रम संख्या	नाम	पद	सेवानिवृत्ति तिथि
1.	रणवीर सिंह कवंर	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	30.04.2019
2.	परम दीप कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.05.2019
3.	कमला देवी	एमटीएस	31.05.2019
4.	कल्याण चन्द धुलिया	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.08.2019
5.	चंद्र कांत राणा	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	31.08.2019
6.	राजेन्द्र कुमार डोगरा	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	30.09.2019
7.	हीरा लाल	रिकार्ड कीपर	30.09.2019
8.	लछमी सिंह	हलवाई-सह-रसोईया	30.11.2019
9.	आत्मा राम पंत	पर्यवेक्षक	31.01.2020
10.	सुंदर सिंह धर्मा	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.03.2020
11.	इन्द्र सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	31.03.2020
12.	रिचर्ड	कैंटीन प्रबंधक	31.03.2020
वर्ष 2019-20 में सेवानिवृत्त हुए अधिकारी/कर्मचारी (ले.व ह. कार्यालय)			
13.	रमेश कुमार आचार्य	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30.04.2019
14.	देवाजिन नेगी	वरिष्ठ लेखाकार	30.04.2019
15.	कमला देवी शर्मा	वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2019
16.	राम प्रकाश ठाकुर	वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2019
17.	धर्मवीर	सहायक लेखा अधिकारी	30.06.2019
18.	प्रेम सिंह	वरिष्ठ लेखाकार	30.06.2019
19.	बेसर राम ठाकुर	वरिष्ठ लेखाकार	30.06.2019
20.	ओम प्रकाश	एमटीएस	30.06.2019
21.	अरूणिमा वर्मा	वरिष्ठ लेखाकार	31.07.2019
22.	चितरंजन कुमार शर्मा	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30.11.2019
23.	अशोक कुमार शर्मा	वरिष्ठ लेखाकार	30.11.2019
24.	मनोहर लाल	वरिष्ठ लेखाकार	31.12.2019
25.	ऊषा ठाकुर	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.01.2020
26.	पींजा राम	सहायक लेखा अधिकारी	31.01.2020
27.	मदन लाल	वरिष्ठ लेखाकार	31.01.2020
28.	चेत राम	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.03.2020
29.	रघुबीर सिहं रावल	पर्यवेक्षक	31.03.2020
30.	प्रभुदयाल	वरिष्ठ लेखाकार	31.03.2020

हिन्दी पखवाड़ा - 2019

विजेताओं की सूची

क्रम संख्या	प्रतियोगिता	प्रथम पुरस्कार	द्वितीय पुरस्कार	तृतीय पुरस्कार
1.	प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता	1. सुश्री वैशाली, स.ले.प.अ. 2. राज कुमार, स.ले.प.अ.	1. राहुल पुंज, एम.टी.एस. 2. अरूण कुमार, डी.ई.ओ.	1. अतुल तायल, स.ले.प.अ. 2. प्रिंसुल निरंजन स.ले.प.अ.
2.	अनुवाद	मुकेन्द्र कुमार स.ले.प.अ.	नेत्र सिंह चौहान स.ले.अ.	राजेश कुमार शर्मा, स.ले.प.अ.
3.	वाद - विवाद	प्रिंसुल निरंजन स.ले.प.अ.	अरूण कुमार डी.ई.ओ.	अतुल तायल स.ले.प.अ.
4.	आशुभाषण	जैसी राम शर्मा, व.ले.अ.	शैलेश सोनी, वरिष्ठ लेखाकार	रजत प्रजापति, स.ले.प.अ.
5.	श्रुतलेख	आयुषी बरनवाल, स.ले.प.अ.	शैलेश त्रिपाठी वरिष्ठ लेखापरीक्षक	सुनीता वर्मा, निजी सहायक
6.	कविता पाठ	हेतराम जसपाल व.ले.प.अ.	शैलेश सोनी, वरिष्ठ लेखाकार	अभिमन्यु राणा, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
7.	निबंध	धर्मेंद्र कुमार वरिष्ठ लेखापरीक्षक	शैलेष सोनी, वरिष्ठ लेखाकार	उज्जवल कुमार राय, एम.टी.एस.
8.	टिप्पण - आलेखन	नेत्र सिंह चौहान स.ले.अ.	अरूण कुमार डी.ई.ओ.	अरूण कुमार गुप्ता स.ले.अ.
9.	कम्प्यूटर पर हिन्दी (यूनिकोड) टंकण	मनोहर ग्रेवाल, व.ले.प.अ.	विनय कुमार सिंह, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	संजीव कुमार, डी.ई.ओ.
10.	कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण	सत्यावती वरिष्ठ लेखापरीक्षक	वीना कुमारी कश्यप वरिष्ठ लेखापरीक्षक	प्रमोद वर्मा, लेखापरीक्षक

हिन्दी पखवाड़ा - 2020

विजेताओं की सूची

क्रम संख्या	प्रतियोगिता	प्रथम पुरस्कार	द्वितीय पुरस्कार	तृतीय पुरस्कार
1.	**अनुवाद (15.9.2020)**	श्री सुदर्शन शर्मा, स.ले.अ.	श्री राजेश कुमार वर्मा, स.ले.प.अ.	श्री निरंजन सूद, स.ले.अ.
2.	**श्रुतलेख (18.9.2020)**	श्रीमती सुनीता वर्मा, निजी सहायक	श्री प्रिंसुल निरंजन, स.ले.प.अ.	श्रीमती विजयलक्ष्मी स.ले.अ.
3.	**कविता पाठ (21.9.2020)**	श्री शैलश सोनी वरिष्ठ लेखाकार	श्री विवक मिश्रा, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	श्री दया सागर, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
4.	**निबंध (22.9.2020)**	श्री उज्जवल कुमार राम, एमटीएस	श्री सुदर्शन शर्मा, स.ले.अ.	श्री राहुल पुंज, एमटीएस
5.	**टिप्पण - आलेखन (23.9.2020)**	श्री योगेश, स.ले.प.अ.	श्री हेतराम जसपाल, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	श्री आनंद कुमार, लेखाकार
6.	**कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण (24.9.2020)**	श्रीमती सत्यावती, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	श्री गुमान सिंह, वरिष्ठ लेखाकार	श्री अजय सिंह, डीईओ

जाखू मन्दिर, शिमला

शिमला हिल्ज़